**Title:** Further discussion regarding atrocities committed on minorities in various parts of the country.
16.00 hrs

सभापति महोदय : अब नियम १९३ के अधीन बहस शुरु होगी। श्री आरिफ मोहम्मद खां, आप ४० मिनट बोल चुके हैं, दो-चार मिनट और बोल लीजिए।

श्री आरिफ मोहम्मद खां (बहराइच) : सम्मानित सभापति जी, उस ४० मिनट में आधे से ज्यादा समय विध्न डालने में चला गया। मैं आपको धन्यवाद देता हूं, आपको धन्यवाद देने के साथ-साथ मुझे उनकी भी स्तुति करनी चाहिए जो विध्न डालते हैं। असल में कल मुझ से गलती हुई। मैंने कल भी एक बात कही थी और आज फिर दोहरा रहा हूं। मैं यह नहीं मानता, नोटिस जरूर ऐसा है। नोटिस में कहा गया है- 'अल्पसंख्यकों के ऊपर अत्याचार' लेकिन निश्चित तौर पर यह अत्याचार बहुसंख्यक वर्ग की तरफ से नहीं हैं, यह मैंने कल भी कहा और आज फिर दोहरा रहा हूं। श्रीमन, संविधान बन जाने के बाद, संविधान ड़ाफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष डा. अम्बेडकर ने कहा-

Every system treats reasonably well those at the top of its social order. The crucial test is as to how it treats those at the bottom.

श्रीमन, धर्म और भाषा के आधार पर अल्पसंख्यक वर्गों को संविधान में चिन्हित किया गया है, विशेष प्रावधान किए गए हैं। मैंने कई घटनाओं के बारे में कल जिक्र किया था। मैंने यह कहा था, हालांकि ग्रह मंत्री जी ने मुझ से कुछ बात कही, उसके जवाब में मैं यह कह रहा हूं कि मैंने अगर कोई बात कही, जब मैंने कहा कि ि वधवाएं बना कर या बच्चों को यतीम बना कर हम धर्म का काम नहीं कर सकते तो निश्चित तौर पर मैंने गवर्नमेंट या पार्टी को नहीं कहा, लेकिन वे लोग जो आपकी फ्रंटल आर्गनाइजेशंस हैं, जो आपकी सहयोगी संस्थाएं हैं वे अगर देश में ऐसे वातावरण बनाती हैं जिससे देश में साम्प्रदायिकता फैलती है, हत्याएं होती हैं, हिंसा होती है तो फिर हिंसा होगी, विधवाएं बनेंगी। क्या १९९२ के बाद सूरत में जो घटनाएं हुई उन्हें हम भूल जाएंगे? क्या हम कानपुर और मुंबई की घटनाओं को भूल जाएं या देश के दूसरे भागों में होने वाली घटनाओं को भूल जाएं? उस राजनीति के नतीजे में, जो राजनीति जीवन देती नहीं बल्कि जीवन लेती है उसमें यह बात निःसंदेह है कि पता नहीं कितनी बहने विधवा हुई हैं और कितने बच्चे यतीम हुए हैं।

महोदय, मैं नहीं कह रहा हूं, आप मेरी बात पर मत जाइए। लेकिन आज जो मौजूदा सरकार है, मेरे मित्र अकाली दल के शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष गुरू चरण सिंह तोहड़ा जी ने ६ दिसम्बर को चंकोर साहब में कहा-

In an obvious reference to attacks on Christian missionaries by Hindu fundamentalists, he said at the Press Conference here this morning that minorities' shrines across the country were unsafe.

श्रीमन, यह मैं नहीं कह रहा, यह शिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष कह रहे हैं और आज ही अखबार में आया है।

16.05 hrs (Mr. Speaker in the Chair)

आज ही अखबार में सत्ता पक्ष के दूसरे मित्र दल समता पार्टी के इस सदन के सम्मानित सदस्य का बयान आया है।

He is the former Chief Minister of Bihar and a senior Samata Party M.P., Shri Abdul Gafoor. He says:

"The BJP is pursuing its own agenda, and therefore, allies stand nowhere."

He further says that `the BJP did not believe in protecting the interests of minorities.'

यह मेरा कहना नहीं है। इस सरकार में जो लोग शामिल हैं, उनका यह कहना है।

श्रीमन, आज अखबार में इस सरकार के एक मंत्री माननीय श्री राम कृष्ण हेगड़े का बयान आया है।

"In an interview to the Asian Age on Tuesday, Mr. Hegde was extremely critical of the anti-minority posturing of these organisations. Although he did not try to draw a distinction between the VHP and the RSS."

यह वह लोग कह रहे हैं जो इस सरकार में शामिल हैं। उनका कहना है कि सरकार अल्पसंख्यक वर्गों के हितों की रक्षा नहीं करना चाहती। इस सरकार की जो सबसे बड़ी पार्टी है, उसके जो सहयोगी दल हैं, यह उन पर निर्भर करता है कि अगर वह अपने मौजूदा तौर-तरीकों को बरकरार रखेंगे

... (व्यवधान)

इसका हैडिग भी यह है :

"VHP actions will lead to Vajpayee's fall."

इस सरकार में जो लोग शामिल है, वह इस बात को कह रहे हैं। पिछले हफ्ते शायद चार तारीख को जब क्रिश्चियन संस्थाओं की तरफ से दिल्ली में एक प्रदर्शन का आयोजन किया गया था, उस दिन यहां बताया गया कि गुजरात सरकार ने क्रिश्चियन मिशनरियों के जरिए चलाए जाने वाले स्कूलों को चेतावनी दी कि अगर वे इस प्रदर्शन में शामिल हुए तो उनके खिलाफ कार्यवाही होगी। उस समय इस सदन में सत्ता पक्ष की तरफ से बड़े जोर से कहा गया कि ये गलत खबरें हैं। मेरे पास वे दो नोटिस हैं जो अहमदाबाद में सैंट जेवियर हाई स्कूल और सेंट मैरी हाई स्कूल को दिए गए। आपको सुन कर ताज्जुब होगा कि सरकार ने इस मामले में बड़ी चुस्ती दिखाई। काश, इतनी चुस्ती सरकार ने किसी और मामले में दिखायी होती तो अच्छा होता। नोटिस में कहा गया कि आपके स्कूल में इंस्पैक्टर गए, चार तारीख को आपका स्कूल बंद था जबकि आपको पहले से चेतावनी दी गई थी। उसमें कहा गया :

"Therefore, you are hereby asked to clarify the matter in person with the District Education Officer tomorrow as to why your grant-in-aid should not be deducted."

ये दो क्रिश्चियन स्कूल को दिए जाने वाले नोटिस थे। यह उस समय दिए गए जब इस माननीय सदन में सत्ता पक्ष की तरफ से जोर देकर कहा गया कि ऐसी कोई कार्यवाही गुजरात सरकार की तरफ से नहीं की जा रही है।

श्री दिलीप संघाणी (अमरेली): यह क्रिश्चियन स्कूल के लिए नोटिस नहीं था। कहा गया था कि अगर कोई भी स्कूल ऐसा करेगा तो कार्यवाही की जाएगी। जिन्होंने ऐसा किया उनको नोटिस दिया गया। जिन्होंने नहीं किया, उनको नोटिस नहीं दिया।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Shri Arif Mohammed Khan, please conclude now. You have already taken more than 15 minutes today.

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : Sir, this is for the first time that the issues of atrocities on minorities are being discussed in this House.

MR. SPEAKER: There are other hon. Members also to speak on this subject. We have to accommodate them also. So, please conclude now.

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : Certainly, more time can be given. On other issues also, more time has been given... (Interruptions)... There was a great interference. I have been disturbed so much that I need a little more time.

MR. SPEAKER: You have already taken more than fifteen minutes. Please try to understand that.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अध्यक्ष महोदय, मेरे पास ये नोटिसेज़ हैं जो पिछले ७-८ महीने में दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली में रहने वाले मुसलमानों को दिये गये हैं। जिनके पास बड़ी बड़ी प्रापर्टीज़ हैं, उनको नोटिस में कहा गया है कि आप आकर यह साबित करो कि आप पाकिस्तानी नेशनल नहीं हैं। अब आप बताइये जिनके पास ज्यादा प्रापर्टीज हैं, उनकी मानसिकता क्या होगी, आप अच्छी तरह से समझ सकते हैं। वे नोटिस पाकर डर गये और उस आफिसर से जाकर मिले। किसी तरह उनमें से ४-५ बहादुर लोग नोटिस लेकर एक वकील के पास गये। उस वकील ने दिल्ली सरकार के अधिकारी को लिखा कि सिर्फ यह बता दिया जाये कि यह नोटिस किस कानून या किस सैक्शन के अंदर दिया है। आज तीन महीने से ज्यादा का समय हो गया है। आज की तारीख में ऐसा पहला नोटिस है जिसमें यह नहीं लिखा हुआ कि किस कानून के तहत यह नोटिस दिया गया है। सिर्फ मुसलमान होने के नाम पर यह कहा जाये कि आकर बताइये कि आप पाकिस्तानी तो नहीं हैं। कल माननीय खुराना जी इशारा कर रहे थे कि ऐसा कोई नोटिस नहीं है। मैंने कल भी कहा था कि आपकी सरकार आने के बाद इन प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिला है जो विघटनकारी हैं, उत्पीड़न पैदा करने वाले हैं और ज्यादती करने वाले हैं। ये प्रवृत्तियां धर्म, बिरादरी, जाति और जन्म के नाम पर अछूत और मलेच्छ बनाती हैं और किसी की जान लेती हैं।

The heading given is `Vandana critics are not Indians'. I quote from the report:

"The Rashtriya Swayamsevak Sangh today said: `The Saraswati Vandana is a symbol of Indian culture and those opposing it are not sons of India."

इस दल से आप प्ररेणा पाते हैं जिनको यह मालूम है कि सरकारी अधिकारी जानता है कि कि उस संगठन के इशारे पर यह सरकार चल रही है और उस संगठन के प्रमुख कह रहे हैं कि जो लोग अपोज़ करेंगे, वे भारत की औलाद नहीं हैं। फिर पाकिस्तानी होने का नोटिस नहीं मिलेगा तो क्या मिलेगा? जुल्म और ज्यादती का यह सिलसिला पिछले आठ महीने से इस देश में जारी है।

मैं यहां पर राजस्थान के एक वाकये का जिक्र करना चाहूंगा। मुम्बई के एक फिल्म एक्टर के खिलाफ एक इल्जाम लगाया गया कि उसने जंगल में एक जंगली जान वर को मार दिया है। अगर उसने मारा है...

श्री भजनलाल (करनाल) : यह सच्ची कहानी है, इसमें झूठ नहीं है और ऐसा कोई इल्ज़ाम नहीं लगाया गया।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : आप पहले मेरी बात तो सुन लें। मैंने कहा कि जब तक अदालत में फैसला नहीं हो जाता, श्री शिवशंकर जी भी एक्यूज्ड रहेंगे.. मुलजिम से आगे कुछ नहीं रहेंगे। मैं तो यही कह रहा हूं कि यदि कानून तोड़ा है तो सख्त से सख्त कार्यवाही करें। लेकिन जिस दिन जंगली जानवर को मारने की खबर अखबार में छपी तो राजस्थान के मुख्यमंत्री फौरन सरकारी मीटिंग छोड़कर पहुंचे और एडीशनल एडवोकेट जनरल को जोधपुर भेजकर कहा कि मुलज़िम की जमानत नहीं होनी चाहिये। उस वक्त अखबार में यह खबर छपी कि एक दलित को बारात में घोड़े पर बैठने से मना कर दिया और उसके घर में आग लगा दी गई। साथ ही पूरे गांव में आग लगा दी गई। ऐसे ही दूसरे मामले में टोंक जिले में एक दलित को पान खाने के आरोप में गिरा-गिराकर मारा गया और उसके घर में आग लगा दी गई। मेरा सिर्फ यही कहना है।

अगर मैं गलत कह रहा हूं तो आप मेरे खिलाफ प्रिविलेज नोटिस ला सकते हैं। ... (व्यवधान)

श्री शान्तिलाल चपलोत : विष्णोइयों ने बहुत बड़ा बलिदान किया है और कभी भी कोई जंगली पशु वहां नहीं मारा जा सकता। आप उनके बलिदान को नकार रहे हैं?

श्री आरिफ मोहम्मद खान : मैं कहां उनके बलिदान को नकार रहा हूं?

... (व्यवधान)

श्री शान्तिलाल चपलोत : आप गलत बात करते हैं।

... (व्यवधान)

श्री आरिफ़ मोहम्मद खान : अगर हमारी पिटाई होगी और हमें बोलने नहीं दिया जाएगा तो मैं नहीं बोलता।

... (व्यवधान)

अगर आप चाहते हैं कि हम पिटें भी और बोलें भी नहीं, तो मैं नहीं बोलूंगा।

... (व्यवधान)

श्री शांतिलाल चपलोत : कोर्ट में मुख्य मंत्री की चलती है क्या?

श्री आरिफ़ मोहम्मद खान : अगर यह तरीका है तो मैं नहीं बोलूंगा।

MR. SPEAKER: What is this? You have already spoken for more than 55 minutes. ... (Interruptions)

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : I will not speak like this. It is your responsibility, Sir, to control them.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: There are other hon. Members to participate in this.

... (Interruptions)

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Sir, why are they objecting?

... (Interruptions)

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : If they say that they will make like difficult for us and also they would not let us speak, then, I am sitting now. I would not speak. ... (

व्यवधान)

16.17 hrs

(At this stage, Shri Akbar Ahmad came

and stood on the floor near the Table.)

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Please go back to your seat.

16.17 hrs

(At this stage, Shri Akbar Ahmad

went back to his seat.)

श्री आरिफ़ मोहम्मद खान : मैंने किसी का नाम भी नहीं लिया है।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: You have to conclude.

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : No. I cannot speak like this. ... (Interruptions) Sir, I have not mentioned the name also.

मैंने विष्णोइयों का नाम भी नहीं लिया है और ये मेरे ऊपर आरोप लगा रहे हैं। यह कोई तरीका नहीं है। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: No. You have spoken for more than 55 minutes.

... (Interruptions)

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : First, order is to be maintained, Sir.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: You may conclude. Otherwise, I will call the other speaker now.

श्री आरिफ़ मोहम्मद खान : ठीक है, मैं तो बैठ ही रहा हूं।

MR. SPEAKER: Please continue and complete it.

श्री आरिफ़ मोहम्मद खान : मैं इस तरह से नहीं बोलूंगा।

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: You have to understand that there are other important hon. Members to speak.

... (Interruptions)

MR. SPEAKER: You can speak and complete it.

... (Interruptions)

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : But I cannot complete like this. ... (

व्यवधान)

मैं एक निवेदन करना चाहता हूं। मैं आरिफ़ मोहम्मद खान अकेले नहीं, बीएसपी के मेम्बर की हैसियत से बोल रहा हूं। मैं दलित की बात यहां करूंगा, मैं ऐसी व्यवस्था को तोड़ने की बात करूंगा जो भेदभाव करती है।

श्रीमन्, मैं एक बात बताना चाहता हूं। तमिलनाडु में

... (व्यवधान)

अब मैं नहीं बोलता।

श्री राजो सिंह (बेगूसराय) : अगर वे वहां से उठकर बोलते हैं तो आप क्यों बैठ जाते हैं? हाउस उनका ही नहीं है। आप बोलिये।

श्री आरिफ मोहम्मद खान : श्रीमन्, तमिलनाडु में एक बहुत बड़े लीडर अन्ना दुरई हुए हैं जो मुख्य मंत्री हुए हैं। वे कमज़ोर वर्ग के परिवार से आते थे। इतने कमज़ोर वर्ग के परिवार से आते थे जिस परिवार की औरतों की इज्ज़त लूट ली जाती थी। शुरू के दिनों में एक सभा को वह संबोधित कर रहे थे तो पीछे से किसी ने उनको शर्मिन्दा करने के लिए पूछा कि तुम्हारे बाप का नाम क्या है। अन्ना दुरई ने अपनी जेब से पांच रुपये का नोट निकाला और कहा कि तुममें से जिस किसी के बाप में यह ताकत थी कि पांच रुपये देकर एक कमज़ोर औरत की इज्ज़त लूट सके, वह मेरा बाप था। मेरा आंदोलन इसलिए है कि आईन्दा फिर कोई किसी गरीब महिला की इज्ज़त न लूट सके। हमारा आंदोलन और कुछ नहीं है। हमारा आंदोलन यही है ताकि फिर जन्म के आधार पर इस देश में विभेद न किया जा सके, ताकि फिर इस देश में धर्म के आधार पर किसी की ज़िन्दगी को तंग न किया जा सके, ताकि धर्म के आधार पर किसी की बाइबल को न जलाया जा सके, किसी के गिरिजाघर को न जलाया जा सके, ताकि किसी अली मियां के घर पर छापा न मारा जा सके। हमारा आंदोलन और कुछ नहीं है। चाहे कोई कितना शोर मचाए, आप जानले सकते हैं, लेकिन आवाज़ को नहीं दबा सकते हैं, चाहे जो तरीके इस्तेमाल कर लीजिए।

MR. SPEAKER: You have to wind up now. How can you take more than an hour?

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : Let me quote some figures, Sir.... (Interruptions)

MR. SPEAKER: How can I accommodate all the Members? Shri Khan has taken more than an hour.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : सर, इसी को आप मेरा कंक्लूजन मान लीजिए।

... (व्यवधान)

AN HON. MEMBER: He must be allowed to complete.

MR. SPEAKER: A number of other Members are also interested to speak.

... (Interruptions)

SHRI SATYA PAL JAIN (CHANDIGARH): Sir, as per the rules, it should be the BJP's turn now.... (Interruptions)

MR. SPEAKER: Shri Khan, you may now conclude.

श्री आरिफ मोहम्मद खांः सर, मैं पांच मिनट में कंक्लूड कर दूंगा। मेरा आपके माध्यम से आग्रहपूर्वक अनुरोध है कि मैं और वक्त न लूं, इसलिए मुझे जल्दी से कंक्लूड करने दिया जाए। मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता। मैं सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि आज सरकारी संस्थाओं में मुसलमानों के ताल्लुक से क्या पोजीशन है। मेरे पास कुछ आंकड़े हैं जो इस प्रकार है - पब्लिक सैक्टर्स में ८२ पब्लिक सैक्टर अंडरटेकिंग्स में पिछले साल के आंकड़े उपलब्ध हैं,

जिसके मुताबिक ४४९ डायरेक्टर्स में केवल २१ मुसलमान हैं, जो कि ४.२ प्रतिशत है। सीनियर ऑफिसर्स १३,९०० में केवल ३२१ मुसलमान हैं, जो कि २.३२ प्रतिशत है। जूडीशियल ऑफिसर्स में सात प्रतिशत से कम हैं। रिजर्व बैंक में १९ मैम्बर्स हैं, जो कि हाइएस्ट बॉडी है

... (व्यवधान)

आपको यह सुनने में भी तकलीफ है। आप जो चाहते हैं वह इस देश में हो रहा है, आज मुसलमानों को बाहर रखा जा रहा है। यह भी सुनने में आपको तकलीफ हो रही है। रिजर्व बैंक सैंट्रल बोर्ड में १९ मैम्बर्स हैं, इनमें एक भी मुसलमान नहीं है, यानी कि जीरो प्रतिशत है। डायरेक्टर्स और सीनियर एक्जीक्यूटिव्ज कुल ६० हैं, इनमें केवल दो मुसलमान हैं। नेशनलाइज्ड बैंक्स में २.५ प्रतिशत से कम हैं।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : महोदय, अगर होम मिनिस्टर इंटरफियर नहीं करेंगे तो आज एक लड़का मर जाएगा। नौ दिन से तीन लड़के आमरण-अनशन पर बैठे हैं, उनकी हालत खराब है। कल हम लोग गए थे। आज एक लड़के की हालत चिन्ताजनक है इसलिए आप डायरेक्शन दीजिए।

SHRI P. SHIV SHANKER : Sir, I would like to draw the attention of the House to one more aspect which has a great bearing. We are proud of the Urdu language. Urdu is born and brought up and spread out in this country, particularly, in Uttar Pradesh. It is our language. It is not the language of Pakistanis. The Punjabis may be having their mother-tongue as Punjabi. The Sindhis may be having their language as Sindhi. But this is a language which is born here on this land, particularly, in Uttar Pradesh. I cannot understand why many people are trying to link the language with the religion. We speak day in and day out English. Are we Christians? I do not know why Urdu alone should be discriminated. I was trying to look into the demands of the Government which they have presented in the Budget. It is a paltry sum of Rs.80 lakh. Urdu language is spread out all over the country, particularly, in Northern India. So far as the spread of Urdu language is concerned, there is no State which can take care of that, like Telugu or Tamil or Kannada or other languages.

The demand of the Human Resource Development Ministry only says `for appointment of Urdu teachers and incentive for teaching Urdu'. That is all. How does that satisfy them? How does that satisfy the people? What is the reaction of the community or the minorities in respect of that.

Sir, the other day the Home Minister had been pleased to make a statement. There is a Baba Budangiri Shrine in Karnataka. What was the necessity to liberate that shrine? For centuries Hindus and Muslims both had been going there and offering prayers. It may not be out of place if I bring to the notice of the Home Minister that near my village where I was born, there is a Baba Shaifuddin's Shrine. My ancestors were the Mutawalli for a long time and it is we who had the entire control over that shrine. Hindus and Muslims both went there. Nobody offered any sacrifices except breaking the coconuts there. It continues even now. They are the Sufis. Sufism is a typical development that has taken place in the Indian culture. Baba Guru Nanak, Kabir and even Hazrat Nizamuddin are the personalities who have developed Sufism. These personalities are all great Sufi saints.

Vishwa Hindu Parishad and Bajrang Dal are their sister organisations. Somebody objected the other day when I referred them as their sister organisations. They said that they were their frontal organisations. They may call them frontal organisations or whatever they like, they are their allies. I am saying what was the necessity for them to go and liberate that shrine when today both Hindus and Muslims go there and offer prayer. Then, they create such a situation which deteriorates communal harmony in the country.

Sir, we have not forgotten Ayodhya so far. In respect of Ayodhya, there had been a mention in the last Session here about preparations that were going on for the purpose of constructing temple. Even the 1998 election manifesto of the Bharatiya Janata Party categorically says that the BJP is committed to facilitate the construction of a magnificent Shri Ram Mandir at Ram janamsthala in Ayodhya where a make-shift temple already exists. What is the message they are giving by this type of a manifesto? ....(Interruptions) Their commitment may be there, but would they like to have that commitment at the cost of the disintegration of this country? Would they like to create a situation of communal disharmony in this country?

Sir, what has happened when Kumari Mamata Banerjee announced that she was going to observe the black day on 6th December? The Vishwa Hindu Parishad constituted a 21-member trust called Gyanvapi Dharamsthala Trust to liberate Kashi-Vishwanath Gyanwapi temple, to counter her approach that she would observe 6th December as a black day. Is that approach justified on the part of their associate organisations? Where I am

finding fault is that if they like to dissociate themselves from those organisations, they have to come out openly. But they have never done so. On the contrary, they have given an impression that they are with them.

17.00 hrs.

They are your associates and you are abetting them in the perpetration of the crimes that they are indulging in. This is the misfortune of the situation. The latest is that the Shiv Sena has gone on record -- my friend, Shri Sirpotdar might get emotional -- that they would not allow the cricketers from Pakistan to play anywhere in the country. While very sweet statements have been given by the Prime Minister, what is the action that is followed? Are we inviting them? Do you not create a communal frenzy by this type of activity? When Christian Organisations decided that having regard to the crimes that had been perpetrated against the Christian community, they would like to observe 4th December as a black day, it was said in this House that the Gujarat Government had administered a warning that if the minority schools are closed on that day, then grants would not be released to them, a large number of friends from that side countered it by saying that there was no such order. But on the same day, I have got the paper cutting with me, the Vice-President of the Bharatiya Janata Party, who happens to be the Member of this Parliament also, said, "Yes, what else could be done if these people close the schools? The Gujarat Government is justified in stopping the release of the funds." Here in this House, their own Members say that no such order has been issued, but their Vice-President goes on record in other way. Is this the way that you infuse confidence in different segments of the society, and is it the way that we run the society? The Vishwa Hindu Parishad goes to the extent of declaring that they would observe 6th December as Diwali Day. What nonsense are we talking? Are we giving an impression to the world that we are a matured or secular nation, and are we giving the impression that we accommodate different segments of the society? You want to observe Diwali Day in order to ignite emotions in other segments of the society and then create the communal trouble.

Sir, I have visited some of the areas in Gujarat. The moment the news of certain atrocities committed on minorities was trickling in, the parties in power should have sent their delegations to those areas for the purpose of pacifying the people and to try to control their emotions. I went to Gujarat in the wake of the news that started trickling down. Our Party sent a delegation of which I was the leader. I myself went to that place; I think, it is Kapadganj. (Interruptions) Well, if I do not remember that name, you need not find fault with me on that. I have gone there and I have seen the grave where the Christian was buried. What has been done is that the grave was dug, the body was taken out and thrown roughly two furlongs away. It was then taken to the Church which is one kilometre away from the place where the body was interned.

There, a makeshift temple has been erected. Is it fair for us? The authorities are keeping quiet about it. When I went there for the purpose of enquiry and when I was trying to enquire from the people, the people were harrowing to tell the truth. People were not prepared to tell as to what it was. Finally, some people who came and told me, they belonged to the majority community; they do not belong to the minority community. They were telling me ghastly stories. What is the Central Government doing? The State Government has not done anything.

Mr. Home Minister, I may bring to your kind notice that the body was lying at the Church till 3 o'clock the next day. It were the Harijans, four kilometers away from that place, who offered to get that body buried in their cemetery and finally it was buried there. It was because there was no place to bury this body. It were the harijans who came to the rescue of that body. I have gone and seen all those places. If these type of incidents take place; if the State Government does not take any action and the Central Government is slumberous then what is the message we are giving to the different sections of the society? Do we expect that the minorities would live in peace if such a situation arises?

Sir, I may also tell the hon. Home Minister that all the 59 Muslim families of the Randhikpur village have vacated the place. It was because they were threatened that they could not continue there. It arose on account of a love affair amongst the youngsters and some people became emotional and the resultant effect was that the whole Randhikpur was shorn of the entire Muslim minority, who vacated the place. What is it we are for? I am only giving certain instances as to how things are taking place.

Sir, when it comes to the question of Christian minorities, they are already feeling the severity of the violence that has started taking place in the States which are governed by the BJP or their associates. The geographic spread of the violence had been tremendous and it should have been controlled. If we do not control it, then it has a definite fall out. The connivance of the political elements and the backing of the political groups in power is creating a problem for that minority community to act in terms of their constitutional rights. The complicity of the State machinery, particularly of the police, in not even registering the cases and the Central Government just looking at the whole thing is something which is rather reprehensive.

17.08 hrs (Shri Basudeb Acharia in the Chair)

Sir, I would just like to bring to your kind notice that the Human Rights Wing of the Christian community has prepared a document which clearly brings out the statistics giving the details and I would like to take the House into confidence. From 1964 to 1996, there were only 33 incidents of minority discrimination so far as the Christians are concerned. The crimes that have been perpetrated on the Christian minority from 1964 to 1996 is only 33 in number. I have got the details and I am prepared to pass it on to you, Mr. Home Minister, so that you may look into it. In 1997, there were 14 incidents.

Their delegation came and met me and the Leader of Opposition. They gave this document to the Prime Minister also. I am told that they gave this document to the hon. Speaker also. They had listed 64 incidents that took place in 1998, apart from 20 more incidents which they had yet to list. That means, a total of 84 incidents took place in the eight months of 1998. When you look into it you will find that from 1964 to 1996, during such a long time, only 33 incidents took place. This year, after the BJP has taken over the Government, there had been more incidents than what happened in the last 50 years. This fact is borne out by the statement of no less a person than Shrimati Maneka Gandhi. In this House in July, 1998, she herself had admitted that more than 50 years had lapsed but not as many incidents had taken place during that period as those that had taken place now. It is the self-confession of a Minister of this Government. If this is the state of affairs, where do we stand?

I have the details of the incidents which I will not like to go into except making reference to a few. Attacks on Christian community as well as the Muslims, ever since this Government has taken over, have been increasing. These attacks took place in Gujarat, Maharashtra, Rajasthan, Uttar Pradesh, in Karnataka and Madhya Pradesh. Here also it is the Sangha Parivar which is creating problems. In these two States of Madhya Pradesh and Karnataka only that cases have been registered against the culprits, investigations have been carried out and charge-sheets framed. In other States where the BJP is in Government, not a single case has been registered. I would like to ...(Interruptions)

श्री थावरचन्द गहलोत (शाजापुर): सभापति महोदय, मध्य प्रदेश में ननों के साथ बलात्कार की घटना में जिसका हाथ था उसी को इलेक्शन में उम्मीदवार बना दिया। ... (व्यवधान)

श्रीमती सुमित्रा महाजन (इंदौर) : इस तरह का स्टेटमैंट नहीं चलेगा, ये बतायें कि कौन से केस में रजिस्टर्ड किया था

... (व्यवधान)

ये बतायें तो सही।

सभापति महोदय : आप बैठिये।

श्रीमती सुमित्रा महाजन : आप गलत जानकारी न दें

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप बैठिये, जब आपको मौका मिलेगा तब बोलियेगा, अभी क्यों बोल रहे हैं।

SHRI P. SHIV SHANKER:Sir, may I appeal to the Minister of Parliamentary Affairs to check his own Members so that they do not go on interrupting or getting emotional unnecessarily when emotions are not needed? ... (Interruptions)

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): इन सबको सिखाकर बैठाया है, इसलिए बीच में बोल रहे हैं।

... (व्यवधान)

प्रो. जोगेन्द्र कवाडे (चिमूर) : क्या ये संघ परिवार के बच्चे हैं, जब भी संघ परिवार का नाम आता है, ये चिल्लाने लगते हैं।

... (व्यवधान)

Sir, on 8th July, the Organising Secretary of the Vishwa Hindu Parishad, Shri Arvind Bhatacharya told The Asian Age newspaper at Guwahati that `the mass conversion programme in Christian dominated States of the North-East would take place at the end of this year, and they were planning to appoint Hindu missionaries in all the North-Eastern States to convert the Christians to Hindus... (Interruptions)

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN (COIMBATORE): It is not `convert'. It is `reconvert'... (Interruptions)

SHRI P. SHIV SHANKER: You are so proud of it! I am ashamed of it. You are proud of it and the nation is ashamed of it... (Interruptions)... you want by force. You should be ashamed of what you say... (Interruptions)

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN : Of course, not... (Interruptions)

SHRI P. SHIV SHANKER : Sir, Shri B.L. Sharma, the former BJP Member of Parliament and presently, the Central Secretary of the Vishwa Hindu Parishad justifies all these acts on minorities and says that `these are the result of the anger of patriotic Hindu youth against anti-national forces.' This has been quoted in all the newspapers.

Equally, Shri S.K. Jain, who happens to be the Secretary of Bajrang Dal says on 4th September, 1998 that `the Bajrang Dal has begun identifying Christian missionaries to launch a second Quit India Movement against Christians.' He further said that `the Christian missionaries are working against the national interest' and he will force them to leave India. `They do not have a moral right to stay in India'. Sir, these types of statements are being made. I do not know, what action the Home Ministry has been taking. No action is being taken -- neither by the State Government nor by the Central Government.

One thing which I would like to bring to your notice. Much worse as to what happened in the recent by-election in Bharuch, Gujarat. I have a photostat copy of a pamphlet which has been issued by one Shri Vidhal Desai, and the printers are the Vishwa Hindu Parishad, Kalyanam Numberam Complex. This pamphlet is divided into parts a), b),c), d) and e). I am reading from it. A question is asked:

"What is today's Congress?"

The answer says:

"Today's Congress is Islamic and Christian Congress."

Now, Question No. 2 says:

"Why do you call the Congress Islamic?"

The answer says:

"a) Because it opposes Saraswati Vandana;

b) Because it opposes Sanskrit language;

c) Because it opposes Ram Janma Bhoomi..."

What a distortion of facts!

MR. CHAIRMAN : Shri Shiv Shanker, please conclude now.

SHRI P. SHIV SHANKER :Sir, I will take 5-10 minutes more. I will not take more time.

MR. CHAIRMAN: You have already taken 45 minutes.

SHRI P. SHIV SHANKER : Within five to ten minutes, I will conclude.

Then, there are Questions No. 3, 4 and 5 which relate to Shrimati Sonia Gandhi, and I am ashamed. I would not like to even read them. This is the culture that they have.

In the pamphlet, Question No. 6, part a) says that the Congress is openly propagating for the protection of Christians. Part b) says that `the Hindu's Congress is no more today'. Sir, Shri Iqbal Kakuji was the Congress candidate seeking a by-election of Lok Sabha from Bharuch. constituency.

It says: `Iqbal Kakuji is the candidate of the Islamic Congress. To vote Congress is to vote `Babar Bhakt' and desh drohi; to vote Congress is to vote those with whom Hindu girls run away.' This is the kind of propaganda. I have read this from the pamphlet published by one Shri Vidhal Desai. (Interruptions)

श्रीमती जयाबहन भरतकुमार ठक्कर (वडोदरा): यह प्रपोगंडा इनकी ओर से किया गया है। इस तरह की भी पत्रिकाएं छपवाई गई थीं जिसमें कहा गया है कि हिन्दु ब्याहता महिलाओं को ले आयो, तो तुम्हे एक लाख रुपये मिलेंगे।

... (व्यवधान)

ऐसी पत्रिकाएं भी हमारे पास हैं।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Hon. Members, please take your seats.

... (Interruptions)

SHRI P. SHIV SHANKER : This was widely publicised. (Interruptions) Mr. Minister, I am prepared to pass this on to you.

श्रीमती जयाबहन भरतकुमार ठक्कर : आप उन पत्रिकाओं को भी पढ़े।

... (व्यवधान)

वे भी आपके पास होंगी।

... (व्यवधान)

हिन्दु लड़कियों को ले आने के लिए ५० हजार, एक लाख रुपये रुपये इनाम, इसे भी आप पढ़े।

... (व्यवधान)

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : मैं बड़े आदर के साथ कहना चाहता हूं कि आप बरसों से राजनीति में हैं। चुनाव में किस-किस तरह की पत्रिकाएं बाहर निकलती हैं, उसके नमूने मेरे पास हैं।

... (व्यवधान)

वे सब मैं आपको दे दूंगा।

... (व्यवधान)

आप बहुत बड़े नेता हैं और मैं आपका बड़ा आदर करता हूं। चुनाव में जिस ढंग से प्रचार किया जाता है, वे पत्रिकाएं हमारे पास हैं।

... (व्यवधान)

ऐसी जो भी पत्रिकाएं निकाली गई हैं,

... (व्यवधान)

उन पत्रिकाओं की कापी में आपको दे दूंगा।

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, he is not yielding. Please take your seats.

SHRI P. SHIV SHANKER : IS This is a compliment to us? (Interruptions) I can tell you that this was widely circulated in the area and as I said, I am prepared to make it available to the hon. Minister so that he may look into it.

This is the manner in which the atrocities on the minorities are going on that is why we insisted that this subject should be discussed. We feared that if we did not discuss this subject, if we did not have any introspection, then, there was a possibility of the society getting disintegrated. We should not allow it to happen. That is why every responsible Indian is concerned and so we wanted to exhibit our concern. It is precisely for this reason that we wanted to discuss this issue.

I have got a large number of instances which I would like the hon. Minister to go through while I would not like to read them out. There are a large number of instances of what has been happening and how the minorities are being harassed. Their life has become miserable. I have got those instances with me but I do not have the time to read them out. So, I would request you to kindly consider them. (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI P. SHIV SHANKER : I know, the hon. Chairman would like me to conclude my speech.

The case is not of the Muslims or Christians alone. This is equally the case of the Sikhs also, about whom Shri Arif Mohammad Khan has spoken. Their Prabhandak Committee Chairman, Shri G.S. Tohra has been accused to be an anti-national. This is the position is. Unfortunately, they still continue to be your associates. That is their choice. (Interruptions)

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN : History cannot forget the treatment you gave to the Sikhs of Delhi. History will never forgive you for that.

SHRI P. SHIV SHANKER : That is not the question. The question today is about what you are doing. The question is not about what has happened in the past. (Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, please take your seats.

SHRI P. SHIV SHANKER : Sir, this is very unfortunate.

सभापति महोदय : आप बैठ जाइये।

SHRI P. SHIV SHANKER : This shows their intolerance.

... (Interruptions)

MR. CHAIRMAN : Please take your seat.

... (Interruptions)

SHRI P. SHIV SHANKER : This shows their intolerance. When I sit here, I do not disturb anyone.

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except what Shri Shiv Shanker says.

(Interruptions)*

SHRI P. SHIV SHANKER : This intolerance will lead you to difficulties. We are worried that the nation will also be in difficulties because of this intolerance. They are so intolerant.

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

... (Interruptions)

SHRI P. SHIV SHANKER : We are so proud of the nation as we are called as tolerant people. This is the type of intolerance that they have. They cannot even brook the expression, the expression in the mildest language. I am not using very strong language. I am only trying to bring facts to their notice; and they are quite intolerant.

SHRI KHARABELA SWAIN (BALASORE): We are not intolerant. We are just reminding you. ... (Interruptions) We are not intolerant. We are just reminding you. We are listening to you for the last one hour. ... (Interruptions)

---

* Not recorded

SHRI P. SHIV SHANKER : You need not remind us. You are sitting there and that is why, you have to answer; and we are sitting here.

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI P. SHIV SHANKER : Sir, in the end, I charge this Government of disturbing communal harmony in this country. I charge it for spreading disaffection amongst different sections of people; for abetting their cohorts like Shiv Sena and others for perpetrating crimes; for - directly or indirectly, by omission or by commission - encouraging the Sangh Parivar to act in a diabolical manner and for abetting the spread of violence. This Government had been eroding the cherished values of this nation which we have proudly inherited over the centuries.

I would also charge this Government of working against the Constitution, after taking oath in the name of the Constitution and dividing and eroding the constitutional values. Thank you very much.

>

श्री सत्य पाल जैन : सभापति महोदय, कल से जो बहस शुरु हुई थी, इस हाउस के बहुत ही वरिष्ठ सदस्य, बहुत सीज़न्ड पार्लियामैंटेरियन श्री आरिफ मोहम्मद खां ने इसकी शुरुआत की। मैं कल भी उनके सारे भाषण के दौरान मौजूद था, आज भी मौजूद था और मैंने बड़े ध्यान से उनका भाषण सुना। उन्होंने मेज़ें थपथपाकर, अपने डैस्क पर मुट्ठियां मारकर इस बहस में हमें भगवान राम की याद दिलाई, धर्म, परम्परा और व्यवस्था का विवरण भी किया और अंत में एक शेर सुनाकर अपनी बात समाप्त की। माननीय श्री शिव शंकर का बयान भी मैंने सुना है। उन्होंने भी हमारी सरकार को चार्ज किया है। शिव शंकर जी, आपके भाषण का जिक्र मैं बाद में करूंगा। आपने जो हमको चार्ज किया है, हम भी आपको डिस्चार्ज करने वाले नहीं हैं, हम भी बाद में आपको चार्ज करेंगे, उस पर मैं दो मिनट में आने वाला हूं।

आरिफ साहब ने राम का जिक्र किया, भगवान गणेश का जिक्र भी किया। मैं पूरे

सम्मान के साथ कहता हूं, जिस लहज़े में आपने किया, जिस भाषा में किया, अगर उस भाषा में न कहा गया होता तो अच्छा होता क्योंकि यदि हम इस तरीके से एक-दूसरे की भावना को आहत करने का प्रयास करेंगे तो बहस सार्थक नहीं होती, उस बहस में से गलत बात निकलती है।

... (व्यवधान)

मैंने आपको टोका नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं आपको टोक नहीं रहा हूं। मेरा एक निवेदन सुन लीजिए। श्रीमन्, मैंने आज सुबह आकर अपनी तकरीर, जो पार्लियामैंट से आई थी, माननीय सरपोतदार जी को दी और कहा कि इधर के साथियों ने कल कुछ आपत्ति की थी। अगर आप इसमें कोई आपत्तिजनक चीज़ निकालें तो मैं उसे वापिस भी लूंगा, आपसे माफी भी मांगूगा और अगर आप कोई सज़ा दें तो वह भी लूंगा। माननीय सरपोतदार जी यहां बैठे हुए हैं। आप वह वाक्य बता दें और शब्द बता दें जो मैंने बोले हैं, सिर्फ यह कह देना कि मैं आहत करूंगा, मैं क्यों आहत करूंगा, मुझे पूरा आदर है, लेकिन अगर आप हिन्दुत्व के नाम पर मेरे गले पर छुरी चलाएंगे,

फिर मैं उसके बारे में बात तो करूंगा, कम से कम मैं उसको बताने की कोशिश तो करूंगा। मैं अभी भी तैयार हूं, मैं अपना भाषण आपको भी देने के लिए तैयार हूं, आप बता दें।

श्री सत्य पाल जैन : खां साहब आपके भाषण का मैं कोई अंश निकलवाना नहीं चाहता, हमारी पार्टी भी नहीं निकलवाना चाहती। आप जो कहना चाहते थे, आपने कहा। मैं सबसे पहला पाइंट यह कहना चाहता हूं कि भारतवर्ष की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि इस मुल्क में ८५ प्रतिशत हिन्दू होने के बावजूद हिन्दुस्तान की संसद में कोई भी व्यक्ति खड़ा होकर जो चाहे बोल सकता है, जो चाहे कह सकता है, यह आजादी इसलिए है कि हिन्दू सेक्यूलर है, हिन्दू समाजवादी है

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया शांत रहें।

श्री पी. शिव शंकर : यह दया की बात नहीं है

... (व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : भारत का संविधान हमें यह अधिकार देता है

... (व्यवधान)

ये लोग नहीं देते हैं

... (व्यवधान)

हम आपकी मेहरबानी पर नहीं हैं ... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Please take your seat. I will go through the proceedings. If there is any objectionable remark, that will be expunged.

श्री आरिफ मोहम्मद खां : भारत का संविधान हमें यह अधिकार देता है

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. I will go through the proceedings. If the hon. Member has made any objectionable remark, that will be expunged.

... (Interruptions)

SHRI C.P. RADHAKRISHNAN : We will not allow this.... (Interruptions) We are also not at their mercy.... (Interruptions)

सभापति महोदयः आप बैठ जाएं।

श्री आरिफ मोहम्मद खां : हम किसी के रहमोकरम पर नहीं हैं।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : If there is anything objectionable, that will be expunged.

... (Interruptions)

SHRI AJIT JOGI : Sir, you ask him to apologise... (Interruptions).

SHRI ANIL BASU : This is the contempt of the House. You ask him to apologise... (Interruptions).

श्री अजीत जोगी : यह कह रहे हैं कि इन्होंने आज़ादी दी है।

... (व्यवधान)

SHRI CHETAN CHAUHAN (AMROHA): Sir, he has not said anything objectionable.

डा. शकील अहमद : हम अपने बलबूते पर आए हैं।

... (व्यवधान)

आपकी मेहरबानी पर नहीं आए हैं। आप पूरे हाउस से माफी मांगिए।

... (व्यवधान)

आपने पूरे हाउस का अपमान किया है।

... (व्यवधान)

जैन साहब, आप पूरे हाउस से माफी मांगिए, आपने सदन को अपमानित किया है।

... (व्यवधान)

सभापति महोदयः आप बैठिए।

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : अठारह पार्टियों से सरकार बनाई है और यहां भाषण दे रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः सभापति महोदय, इस सदन में अभिव्यक्ति की जो स्वतंत्रता है, उसका कारण हमारा संविधान, हमारे नियम हैं।

... (व्यवधान)

मैं मानता हूं कि यह हमारा संविधान और हमारे नियम भी हमारी परम्परा का एक हिस्सा है। यहां पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमेशा नहीं है लेकिन मैं सभी सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि संसद की बहस के लिए हमारे शिव शंकर जी जैसे पुराने जो नेता हैं, उनसे कुछ सीखें। आज उन्होंने कई बातें कही जिन पर मैं

सहमत नहीं होऊंगा और यहां पर बैठे हुए बहुत सारे लोग सहमत नहीं होंगे लेकिन उनकी स्पीच में कहीं कोई उत्तेजना नहीं थी, अपना तर्क था। मुझे खुशी होती अगर इस बहस का आरम्भ करने वाले ने भी इस प्रकार की शैली अपनाई होती और इस प्रकार की बात नहीं कही होती। जो कुछ हुआ है, वह अच्छा नहीं था। मैं इतना ही अनुरोध करूंगा कि जिस प्रकार से कई बातें जो मुझे आरिफ मोहम्मद खां जी की पसन्द नहीं आईं तो भी मैंने उनको टोका नहीं और आखिर में जाकर कल पांच मिनट के लिए टोंका-टोंकी हुई जो नहीं होनी चाहिए थी। हमने उनको बाद में जाकर कहा कि मुझे जो बातें पसन्द नहीं आईं, वे ये थीं और मैं चाहूंगा कि अभी-अभी जिस प्रकार से आपको इनकी शैली पसन्द नहीं आई तो उसके परिणामस्वरूप यह कहना कि यह नहीं चलेगा, यह उस शैली का अनुसरण नहीं है।

... (व्यवधान)

यह तरीका ... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Let him complete.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः सभापति महोदय, आप सहिष्णुता की बात कह रहे थे, तो मैंने उसी समय कहा

... (व्यवधान)

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह : महोदय, सदन में ऐसी कोई बात नहीं कहनी चाहिए, जिससे उत्तेजना पैदा हो

... (व्यवधान)

सभापति महोदयः आप बैठिए। होम मिनिस्टर को बोलने दीजिए।

...(व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं किसी की बात से सहमत नहीं हूं, फिर भी मुझे उसका आदर करना चाहिए। सहिष्णुता से व्यवहार करना चाहिए। मैं आपके निर्णय से सहमत हूं, चाहे हमारे इधर के सदस्य हो या उधर से हों, जो अनपार्लियामेंट्री शब्द हैं, वे निकाल दें और साधारणतः शिवशंकर जी के अनुसार बहस को जारी रखें

... (व्यवधान)

किसी को किसी का दलाल कहना संसदीय नहीं है।

SHRI TARIT BARAN TOPDAR (BARRACKPORE): Are they representing 85 per cent?...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Please go to your seats.

... (Interruptions)

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN : No way, Sir. We are not here at their mercy. We have been sent here by the people...(Interruptions)

डा. शकील अहमदः सभापति जी, उनसे माफी मांगने के लिए कहिए।

... (व्यवधान)

श्री राजवीर सिंह : यह आप नहीं कह सकते हैं, सभापति जी कह सकते हैं।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: The Home Minister has already clarified it.

... (Interruptions)

श्री अजीत जोगी : इनके रहमोकरम पर हम यहां नहीं हैं। भारत के संविधान से हमें अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता मिली है।

... (व्यवधान)

SHRI ARIF MOHAMMED KHAN :We are not at their mercy in this House...(Interruptions) The Home Minister is saying about the unparliamentary words that have been used. I would like to know what have I said which is unparliamentary?...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: Shri Khan, please take your seat.

... (Interruptions)

PROF. SAIFUDDIN SOZ (BARAMULLA): I am on a point of order. I do not believe in raising slogans etc. I have disciplined myself. I am raising a point of order under Rule 376. The point is that the actual expresssion of the hon. Member constitutes a violation of the Constitution. As the Home Minister said, it is our right as Members to express our views. But the implicit meaning of that expression uttered by the Member constitutes an insult to the House and to the Constitution.

Now, what is the remedy? The remedy is that he must withdraw that word and he must apologise to the House. We do not want any expunction business...(Interruptions) He has to withdraw it....(Interruptions)

डा. शकील अहमद :वह तो भड़काने की बातें कर रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह : जब नियम के विरूद्ध बात होगी तो कैसे हाउस चल सकता है।

... (व्यवधान)

PROF. SAIFUDDIN SOZ : Mr. Chairman, Sir, we do not want you to expunge anything. He must withdraw it.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः सभापति जी, मैं आपके ऊपर छोड़ता हूं। अगर इन्होंने कोई ऐसी बात कही है जो संविधान के खिलाफ है तो उसे निकाल देना चाहिए, मैं उससे सहमत हूं।

... (व्यवधान)

PROF. SAIFUDDIN SOZ: This is not his style. This is the expression of his opinion.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः आप पहले मेरी बात सुनिए। कल से लेकर लगातार मेरे मित्र आरिफ साहब इस बात पर बल देते आए हैं, मैं बहुमत पर, माइनोरिटी पर आरोप नहीं लगा रहा हूं, मैं इसको मेजोरिटी, माइनोरिटी का सवाल नहीं मानता हूं। मैं उत्तर दूंगा। इसलिए इनकी इस भाषा से मैं सहमत नहीं हूं कि ८५ प्रतिशत के कारण है। ... (व्यवधान) यह हमारा अधिकार संविधान के कारण है लेकिन यह बात भी सही है कि यहां पर जो संविधान बना है वह यहां की परम्परा और यहां के बहुमत के आधार पर बना है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इसलिए इनका जो स्टाइल है मैं उससे सहमत नहीं हूं। जो वस्तुस्थिति है आप उससे सहमत हों या न हों लेकिन यह बात सही है कि हिन्दुस्तान की परम्परा के अनुसार हिन्दुस्तान की मेजोरिटी ने यह संविधान बनाया, बहुत अच्छा किया। फिर भी मैं कहूंगा कि अगर ८५ प्रतिशत का जिक्र न करते तो अच्छा होता। लेकिन क्या हरेक के स्टाइल के आधार पर आप निर्णय करेंगे कि इनका अधिकार है या नहीं। इसलिए अगर कोई संविधान के खिलाफ बात कही है तो आप उसमें से निकाल दीजिए। ... (व्यवधान) अन्यथा यह असहिष्णुता हमारी परम्परा के खिलाफ है।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : I will expunge if there is any objectionable remark. I have already said it.

श्री सत्य पाल जैन : महोदय, आरिफ साहब ने अपनी तकरीर में सलमान साहब के साथ जो केस हुआ उसका जिक्र किया और इन्होंने ऐसा इम्प्रेशन देने की कोशिश की, क्योंकि सलमान खां के खिलाफ जो सरकारी वकील गया वह उनकी बेल रद्द करवाने के लिए गया। वह भी शायद अल्पमत पर एक अन्याय वाली

बात थी। मुझे बहुत दुख हुआ, मुझे लगता है कि अगर सलमान खां ने खुद भी उनका भाषण सुना होगा तो शायद वह स्वयं भी बहुत इमबेरेस महसूस करते होंगे कि मेरे प्रकरण को माइनोरिटी के साथ एट्रोसिटीज़ पर जोड़ कर आपने पेश करने की कोशिश की।

महोदय, एक फिल्म आई थी- 'हम आपके हैं कौन,' यह फिल्म आरिफ मोहम्मद साहब ने भी देखी होगी, मैंने भी देखी थी। उस फिल्म में सलमान खां और माधुरी दीक्षित का प्यार दिखाया था। इन दोनों की शादी होनी थी लेकिन माता-पिता ने अंजाने में इनकी शादी उनके बड़े भाई से तय कर दी थी। मैं तो डर रहा था कि कहीं आरिफ साहब यह न कह दें कि वह फिल्म की स्टोरी लिखने वाला भी साम्प्रदायिक था, क्योंकि ये माइनोरिटी कम्युनिटी के आदमी थे इसलिए उसका नाम लिख दिया और वह भी माइनोरिटी कम्युनिटी के एट्रोसिटी वाली बात थी।

महोदय, उन्होंने हमारी परम्पराओं का एहसास किया है, इस बात में मैं उनसे १०० परसैंट सहमत हूं। यह जो एट्रोसिटीज़ की बात हो रही है, यह मेजोरिटी कम्युनिटी माइनोरिटी कम्युनिटी पर नहीं कर रही। मैं कहना चाहता हूं कि जब आरिफ साहब के गलत सिगनल आते हैं तो भी वह माइनोरिटी कम्युनिटी की तरफ से नहीं होते। हिन्दुस्तान का मुसलमान हिन्दुस्तान का बराबर का नागरिक है। उसने हिन्दुस्तान की आजादी में बराबर का हिस्सा लिया है। वह हिन्दुस्तान के विकास में पूरा योगदान करना चाहता है, उसकी हिन्दुस्तान के विकास में भागीदारी है। हम उसकी तरक्की चाहते हैं। लेकिन दुख इस बात का है कि उनके नाम पर कुछ लोग बहुमत की चिन्ता नहीं करते, अल्पमत की चिन्ता नहीं करते, वे सिर्फ वोट, मत की चिन्ता करते हैं।

... (व्यवधान)

मैं दावे से कहता हूं, मैंने शिवशंकर जी, आरिफ साहब का भाषण सुना है। आप कांस्टीटयूशन की बात करते हैं, हिन्दुस्तान की संविधान की धारा १४,१९,२२६ और धारा ३२ किसी को भी कचहरी में जाने का अधिकार देती है। शिवशंकर जी, मैं आपको चुनौती देता हूं, आप वकील हैं, मैं आरिफ साहब को भी चुनौती देता हूं, आप हिन्दुस्तान की सारी कचहरियों में घूम आइए, हमारे आठ महीने के दौर में किसी एक मुसलमान भाई ने, क्रिश्चियन और सिख भाई ने जाकर हमारी सरकार के खिलाफ मुकदमा डाला हो कि मेरे ऊपर धर्म के नाम पर ज्यादती हुई है तो जो सजा आप कहेंगे मैं यहां स्वीकार करने को तैयार हूं।

... (व्यवधान)

आपने हमें परम्परा की याद दिला कर बहुत अच्छा किया। मैं उनका बड़ा आभारी हूं। अच्छा होता, आपने हमारी सांझी परम्पराएं बतायी होती कि हिन्दुस्तान की परम्परा धर्म के नाम पर सिर लेने की नहीं है। गुरु तेगबहादुर ने सिर देकर धर्म की रक्षा करने की परम्परा डाली है। यह मेरे देश की परम्परा है। शिव शंकर जी ने जो कहा मैं उन्हें उसकी कुछ याद दिलाना चाहता हूं। उन्होंने गुरचरण सिंह तोहड़ा का जिक्र किया। भाजपा जत्थेदार गुरचरण सिंह तोहड़ा का बहुत सम्मान करती है। वह राष्ट्रभक्त और देश भक्त हैं। उनकी राष्ट्रभक्ति और देशभक्ति पर कोई शक नहीं कर सकता लेकिन मैं हैरान हूं कि आपको सिखों की चिन्ता कब से हो गई, आपको पगड़ी की चिंता कब से हो गई? आप १९८४ का वाकया भूल गए। आपके राज में ३४०० सिखों के गले में टायर, मिट्टी का तेल डाल कर, उनकी हत्या कर जिन्दा जलाया गया था, उनको आप भूल गए। ... (व्यवधान)

खां साहब विधवाओं का जिक्र कर रहे थे। आप मेरे साथ पंजाब, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर चलें। आज भी चार हजार सिख परिवार की विधवाएं दिल्ली में रोज दर वाजे पर आकर देखती हैं कि कहीं से उनका पति आ जाए और उनकी मांग में सिंदूर भरे, उनको पत्नी कह कर बुलाए। आप उन यतीम बच्चों को देखिए जो आज भी अपने दरवाजे पर खड़े होकर अपने पिता का इंतजार कर रहे हैं। चार हजार सिख भाइयों का आपके राज में कत्ले आम हुआ। यह मेरा शिव शंकर जी के ऊपर चार्ज है। पंजाब में तीस हजार हिन्दुओं का कत्ल हुआ। आपके राज में मुसलमान भाइयों का कत्ल हुआ। आज आप हमें सबक सिखाना चाहते हैं।

आरिफ साहब परम्परा की बात करते हैं। उन्होंने विधवा की परम्परा की बात कही। यह देश की परम्परा नहीं है। इस देश की परम्परा में अब्दुल हमीद हिन्दुस्तान में लड़ता हुआ शहीद हुआ था। सारे देश को उस पर गर्व है। लेकिन सोचिए अब्दुल हमीद के मन पर क्या बीतती होगी जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की टीम का मैच हो, पाकिस्तान टीम जीत जाए और भारतीय टीम हार जाए। अगर कुछ लोग किसी आधार पर हिन्दुस्तान के झंडे गिराते होंगे तो राष्ट्रभक्त मुसलमानों पर क्या बीतती होगी? इसका भी आपने अन्दाजा लगाया होता। यह हमारे देश की परम्परा नहीं है। हमारे देश की परम्परा गुरु गोविन्द सिंह के बच्चे दीवारों में चुनवाने की परम्परा है। हमारे देश की परम्परा सिर कलम करने की परम्परा नहीं है। इसलिए डिफरैंस ऑफ ओपिनियन को बर्दाश्त करना इस मुल्क की परम्परा है जिसके आप और मैं सांझे वारिस हैं। आप एक कम्युनिटी पर अत्याचार की बात कर रहे थे। क्या मुसलमानों में शिया और सुन्नी के बीच विवाद नहीं होते? क्या हिन्दुओं में जैनियों के आपस में झगड़े नहीं होते? मैं जैन समुदाय से हैं। दिगम्बर और पिताम्बर अपनी बात कहते हैं। मंदिरों में जहां मूर्तियां हैं, वहां भी झगड़े चल रहे हैं। क्रिश्चियन्स के चर्चों में झगड़े चल रहे हैं। हर झगड़े को कम्युनल कलर देने की कोशिश करेंगे तो हिन्दुस्तान के साथ न्याय नहीं होगा। यह ज्यादती है। इसे करने की कोशिश न कीजिए।

यहां राम मंदिर का बहुत जिक्र हुआ। मैं याद दिलाना चाहता हूं कि आडवाणी जी ने जो रथ यात्रा निकाली थी, उसे चलाने वाला एक मुसलमान नौजवान था जो पूरे गर्व के साथ रथ यात्रा लेकर अयोध्या तक गया था। हिन्दुस्तान का मुससमान राम मंदिर का विरोध नहीं करता है।

... (व्यवधान)

हिन्दुस्तान का आम मुसलमान लाल चौंक पर राष्ट्रीय झंडा फहराने का विरोध नहीं करता है।

डा. शकील अहमद : जोशी जी श्रीनगर में लाल चौंक पर उल्टा झंडा फहरा कर चले आए थे। हमारा सारी दुनिया में मजाक उड़ गया और हमारी नाक कट गई।

... (व्यवधान)

श्री सत्य पाल जैन : सभापति महोदय, यह अच्छा हुआ शकील साहब आपने लाल चौक की याद दिलाई। मैं बहुत खुश हूं कि आपने इसका ज़िक्र किया। लाल चौक पर झंडा फहराने की मुखालिफत हिन्दुस्तान का मुसलमान नहीं करता। कुछ चुने हुये लोग थे जिन्हें डर था कि उनकी नेतागिरी समाप्त हो जायेगी। आज हमारे प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी जी श्रीनगर जाते हैं तो लाखों मुसलमान उनका जलसा सुनने के लिये आते हैं और भारत माता की जय का नारा लगाकर स्वागत करते हैं। और आप उलटा झंडा फहराने की बात कहते हैं। आपके होम मिनिस्टर को श्रीनगर जाने की हिम्मत नहीं होती थी

डा. शकील अहमद : उस समय हमारी सरकार थी और हमने उनको सुरक्षा प्रदान की थी।

श्री सत्य पाल जैन : सभापति महोदय, मैं दो बातें कहकर इस पाइंट को खत्म कर अगली बात पर आउगा। यह इस मुल्क की परम्परा है कि सैकुलरिज्म कायम है। मैं इसके लिये छोटे-छोटे दो उदाहरण देना चाहूंगा। यहां पर सरदार बूटा सिंह जी बैठे हुये हैं। अभी गुरु साहब का जिक्र किया गया तो मैं आपको बताता हूं कि गुरु गोबिन्द सिंह जी के सिपाही कन्हैया से बढ़कर सैकुलरिज्म का उदाहरण और कोई नहीं हो सकता है। भाई कन्हैया घायल सिपाहियों को पानी पिलाया करता था। एक दिन गुरु जी से शिकायत की गई कि भाई कन्हैया मुगल बादशाह के घायल सिपाहियों को पानी पिला रहा है। गुरु जी ने उसे बुलाया तो भाई कन्हैया ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया कि महाराज मैं पानी पिलाता हूं लेकिन पानी पिलाते समय मुझे इस बात का मंत्र नहीं होता कि कौन मुसलमान है और कौन सिक्ख है। मुझे तो हर घायल सिपाही को पानी पिलाते समय उसमें आपका रूप नज़र आता है। इसलिये पानी पिलाते समय यह मालूम नहीं होता कि कौन सिक्ख है और कौन मुसलमान।

सभापति महोदय, शिवाजी महाराज जब लड़ाई लड़ रहे थे तो एक दिन उनका सैनिक एक सुन्दर सी महिला को पकड़कर उनके दरबार में ले आया और कहा कि महाराज मैं दुश्मन के कैम्प से एक सुन्दर महिला को ले आया हूं। शिवाजी ने कहा बेशक यह दुश्मन की महिला है लेकिन हर महिला की इज्जत करना हमारा धर्म और परम्परा है। इसलिये इसे ले जाकर आदर सहित दुश्मन के कैम्प में छोड़कर आओ। इसके साथ यह भी कहा काश मेरी मां भी इस तरह से सुन्दर होती। इस प्रकार शिवाजी के मन में मुस्लिम महिलाओं के लिये कितना सम्मान था।।

सभापति महोदय, इसी प्रकार गोल्डन टैम्पल की नींव एक मुसलमान सूफी फकीर ने रखी थी। इस मुल्क में धर्म के नाम पर कभी ज्यादती नहीं हुई और न ही अन्याय हुआ है। ये लोग हमें परम्परा सिखाना चाहते हैं। यदि आप अपनी परम्परायें ठीक से पढोगे तो सारी बातें आपको ठीक से समझ में आ जायेंगी।

सभापति महोदय. जहां तक बहुमत और अल्पमत का सवाल है, संविधान में कोई बहुत विश्लेषण नहीं किया गया है। हमारे संविधान की कई धाराओं में माइनरटीज का जिक्र किया गया है। यह स्वाभाविक है कि जब आप माइनरटीज की बात करेंगे तो आपको मेजारिटी की बात भी करनी पड़ेगी। यह रिलेटिव टर्म है। हिन्दुस्तान के संविधान में माइनरटीज को राइटस दिये गये हैं और उसका परिणाम यह निकला कि आज गंभीर चिन्ता का विषय है। मैं चाहता हूं कि श्री शिवशंकर जी इस बात को कहते। आज कचहरियो में होड़ लगी हुई है कि हर कमयुनिटी जाकर कहती है कि वह माइनरटीज है। हरियाणा और पंजाब हाई कोर्ट का निर्णय आया कि सनातनधर्मी और आर्यसमाजी माइनरटीज हैं। सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया कि रामाकृष्ण मिशन माइनरटीज में हैं। हरियाणा का गौड़ ब्राहमण कहता है कि वे माइनरटीज में हैं। मैं खुद जैन हूं और मेरी कम्युनिटी के लोग मेरे पीछे पड़ रहे हैं लेकिन मैं स्पष्ट मत का हूं कि जैन कभी माइनरटीज में नहीं हैं। वे समाज का एक पार्ट हैं। इनको अलग करने की कोशिश नहीं होनी चाहिये। सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने यह है कि मेजारिटी और माइनरटीज के बारे में निर्णय लेना पड़ेगा। हिन्दुस्तान में कोई भी ऐसी कम्युनिटी नहीं है जो सब जगह मेजारिटी में हो। हमारे मुसलमान भाई कश्मीर मे मेजारिटी में और हमारे हिन्दू माइनरटीज में हैं और सिक्ख भाई....

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अगर हिन्दुस्तान में ....

श्री सत्य पाल जैन : आप मेरी पूरी बात सुन तो लीजिये।

श्री आरिफ मोहम्मद खां: जम्मू कश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा है और उसे कोई अलग नहीं कर सकता और आप क्या कह रहे हैं हिन्दू जम्मू कश्मीर में माइनरटीज में हैं....

श्री सत्य पाल जैन : हमारे सिक्ख भाई पूरे हिन्दुस्तान में माइनरटीज में हो सकते हैं लेकिन पंजाब में मेजारिटी में हैं। हमारे हिन्दू भाई पाकिस्तान में माइनरटीज में हैं लेकिन हमारा जम्मू और कश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा था, है और हिस्सा रहेगा।

18.00 hrs.

ुनिया की कोई ताकत उसको अलग नहीं कर सकती। हिन्दुस्तान के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग स्थिति है। अगर सिख भाई पंजाब में मेजॉरिटी में हैं तो दिल्ली में माइनॉरिटी में हैं। मुसलमान जम्मू-कश्मीर में मेजॉरिटी में हैं तो दिल्ली में, पंजाब में, यूपी में माइनॉरिटी में हैं। अगर हिन्दू हरियाणा में मेजॉरिटी में हैं तो पंजाब में माइनॉरिटी में हैं। सभापति जी, मैं कहना चाहता हूं कि इस बात का निर्णय हिन्दुस्तान में होना चाहिए कि आखिर क्या एक प्रांत में जो मेजॉरिटी राइट क्लेम करती है या माइनॉरिटी राइट क्लेम करती है

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN : Now, it is 6 o'clock. How much time would you take?

SHRI SATYA PAL JAIN : At least, half-an hour.

MR. CHAIRMAN: Is it the sense of the House that we should extend the sitting up to 7 o'clock.

SOME HON. MEMBERS: No, Sir.

PROF. P.J. KURIEN : Sir, there are a large number of speakers. I would request that the time of the House be extended.

SOME HON. MEMBERS: That is right, Sir.

MR. CHAIRMAN: The sitting is extended up to 7 o'clock.

श्री सत्यपाल जैन : सभापति जी, मैं राज्यों की बात कर रहा था। मैं दो-तीन राज्यों का विश्लेषण आपके सामने ज़रूर रखना चाहता हूं।

श्री रामानन्द सिंह : सभापति जी, आपने सात बजे तक समय बढ़ाया है मगर हम जानना चाहते हैं कि क्या हमें भी इस बहस में ऐडजस्ट करेंगे? इस पर कई लोग बोलना चाहते हैं। सवाल यह है कि विषय बहुत महत्वपूर्ण है। आरिफ़ साहब ने मामला उठाया, उस पर बड़ी गंभीर चर्चा शुरू हुई है। चर्चा ठीक से होनी चाहिए।

सभापति महोदय : जैन साहब को बोलने दीजिए। आप बैठिये।

श्री रामानन्द सिंह : हम लोगों को भी समय मिलेगा?

सभापति महोदय : सबको समय मिलेगा।

श्री अजीत जोगी : रामानन्द सिंह जी का नाम उनकी पार्टी नहीं देती है।

श्री सत्यपाल जैन : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रांतों का ज़िक्र कर रहा था। प्रांतों में पंजाब एक प्रमुख प्रांत है जहां पर सिख भाई मेजॉरिटी में हैं और हिन्दू भाई माइनॉरिटी में हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि पिछले ५० सालों में हमारे कांग्रेस के भाइयों का अधिकांश समय राज पंजाब और दिल्ली में रहा। यह एक ऐसा प्रांत है जहां केन्द्र की आई सरकारों में प्रमुख तौर पर हमारे सामने बैठे हुए साथियों की सरकार थी। इन्होंने दोनों कम्यूनिटियों को नहीं बख्शा। आप तोहड़ा साहब का ज़िक्र कर रहे हैं। मैं याद दिलाना चाहूंगा जब स्वर्गीय राजीव गांधी चंडीगढ़ गए थे। वहां एक पत्रकार सम्मेलन किया और संत जरनैल सिंह भिण्डरवाले जिन पर आरोप लगे कि उन्होंने पंजाब में उग्रवाद को बढ़ावा दिया था, उनको धार्मिक संत चंडीगढ़ के पत्रकार सम्मेलन में स्वर्गीय राजीव गांधी कहकर आए थे। तोहड़ा साहब की तुलना आप भिण्डरवाले से करना चाहेंगे? तोहड़ा साहब ने इस दौर में पंजाब की एकता के लिए संघर्ष किया है, लेकिन आप उस व्यक्ति को धार्मिक संत बोलकर आए थे जिस व्यक्ति पर उग्रवाद का आरोप लगा था। आपने अकाल तख्त तोड़ा जो सिख भाइयों के लिए सर्वोच्च संस्था है। ठीक कहा आरिफ़ साहब ने कि तोहड़ा साहब का व्यक्तिगत स्थान जो मर्जी हो, लेकिन सिख संस्था के अध्यक्ष होने के नाते उनका स्थान बहुत ऊंचा है और अकाल तख्त का स्थान सिख परंपरा में बहुत ऊंचा है। इस सरकार ने उसको भी नहीं बख्शा था। आपने वह भी गिराया था। तब आपको माइनॉरिटी पर ऐट्रोसिटी नज़र नहीं आई थी? ३०,००० हिन्दू भाई पंजाब में मारे गए, बसों से उतारकर मारे गए, रेलवे स्टेशनों पर मारे गए और उस समय वहां किसकी सरकार थी? प्रकाश सिंह बादल और भारतीय जनता पार्टी की सरकार में एक भी सांप्रदायिक दंगा पंजाब में नहीं हुआ। जितने निर्दोष मारे गए, उस समय मारे गए जब सरदार दरबारा सिंह मुख्य मंत्री थे या वह सज्जन मुख्य मंत्री थे जिनका नाम मैं नहीं लेना चाहता क्योंकि वह हिन्दुस्तान के राष्ट्रपति पद पर रह चुके हैं। आप अल्पमत की बात करना चाहते हैं? लाला जगत नारायण और रमेश चन्द्र का उदाहरण मैं देना चाहता हूं। शिवशंकर जी होते तो मेरी बात सुनते। आपने घटनाएं बताई हैं। स्वर्गीय रमेश चन्द्र की जालंधर में हत्या कर दी गई थी। इस सरकार ने उनकी शव यात्रा निकालने की आज्ञा नहीं दी थी। कहा गया कि सिर्फ ५० लोगों के नाम भेजिये, तब कर्फ़्यू पास मिलेंगे। सारे हिन्दुस्तान में एक ही उदाहरण है जब सरकार ने शव यात्रा निकालने की इजाज़त नहीं दी और स्वर्गीय रमेश चन्द्र का अंतिम संस्कार श्मशान घाट पर नहीं हुआ, उनके घर के सामने जो ग्राउंड था, वहां उनका अंतिम संस्कार किया गया और आप हमें माइनॉरिटी की बात बताना चाहते हैं!

दूसरे प्रांत दिल्ली के बारे में मैने जिक्र किया। हमारे सिख भाइयों के खिलाफ जो ज्यादतियां हुई थीं उसका जिक्र मैं पहले कर चुका हूं। आपकी सरकार ने उन दोषियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की। मैं भारतीय जनता पार्टी की श्री मदन लाल खुराना सरकार को बधाई देना चाहता हूं जिसने सरकार में आने के बाद दोषियों को पकड़ा, उनके खिलाफ केस चलाये, उनको पकड़कर जेल में डाला और आज मुझे शक है कि दिल्ली में आपकी सरकार वापस आ गई हैं, आप फिर से उस प्रोसेस को डायल्यूट करोगे, आप उनके खिलाफ कार्यवाही करने में अपने हाथ नहीं चलाओगे। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि यह एट्रोसिटीज आपको सिखों पर नजर नहीं आईं। क्या शिवशंकर जी आपने इसका जिक्र करना आवश्यक नहीं समझा?

सभापति महोदय, जम्मू-कश्मीर में आ जाइये। जम्मू-कश्मीर में आपकी सरकार के दौर में हुआ, फारूख अब्दुल्ला की सरकार के दौर में नहीं हुआ। कितने हजार हमारे भाई शरणार्थी बनकर आये। कौन लोग शरणार्थी बनकर आये। वे लोग शरणार्थी बनकर नहीं आये जो हिंदुस्तान की निंदा करते थे। इस भारत माता को अपनी माता मानने वाले, संविधान में विश्वास रखने वाले, इस देश की परम्परा में विश्वास रखने वाले हजारों-लाखों लोग आज भी शरणार्थी तिलक नगर, दिल्ली के कैम्पों में बैठे हुए हैं, पंजाब के कैम्पों में बैठे हुए हैं, यह आपको ५० साल के राज में नजर नहीं आया कि वे भी अल्पमत के हैं, उनके भी अधिकार हैं। दुनिया भर

की बातें हो जाए, आपके नेता जाते रहे। सभापति महोदय, आप मेरे साथ चलिये, मैं आपको उन लोगों के पास लेकर जाता हूं। आपके नेता कभी उनका हाल पूछने नहीं गये जिनकी लाखों-करोड़ों की प्रोपर्टी थी, आज वे भिखमंगे बनकर दिल्ली की सड़कों पर घूम रहे हैं और इल्जाम आप हम पर लगाना चाहते हो। आपके राज में अल्पमत के लोग सुरक्षित नहीं हैं। आप किस ढंग से बोलना चाहते हो।

आप मुसलमानों की बहुत बातें करते हैं। मुझे यकीन है आरिफ साहब भले ही आज हमारी निंदा कर रहे हों, हमारी सरकार को क्रिटीसाइज कर रहे हों, परंतु कांग्रेस पार्टी का कार्यों के बारे में उन्हें कोई शंका नहीं होगी।

इमरजेन्सी के समय को लीजिए, तुर्कमान गेट पर मुस्लिम भाइयों पर बुलडोजर चले थे, वह किसकी सरकार में चले थे। जब शाही इमाम ने फतवे जारी किये थे, वे किसकी सरकार के दौरान किये थे। तब आरिफ साहब हमारे साथ जेल में थे। आज भले ही आप सेक्युलर फोर्सेज को इकट्ठा करने के नाम पर उनके साथ जा रहे हों। आप एट्रोसिटीज की बात करना चाहते हैं। हमारे भाई सेक्युलरिज्म की बात कर रहे थे। मैं याद दिलाना चाहता हूं कि श्री नरसिंहराव हिंदुस्तान के प्रधान मंत्री थे, नॉर्थ ईस्टर्न स्टेटस में चुनाव होने वाले थे, आज सेक्युलरिज्म की बात करने पर आपको आपत्ति होती है। मैंने एक बात कही तो आपको आपत्ति होती है। आपकी पार्टी ने कहा था कि अगर हम सत्ता में आयेंगे तो बाइबिल के जो सिद्धांत हैं, उनके आधार पर हम अपनी सरकार चलाना चाहेंगे। आज मेरे रेफरेन्स पर आप मेरे से माफी मंगवाना चाहते हो। आरिफ साहब को मैं याद कराना चाहता हूं कि हिंदुस्तान में मुसलमान महिलाओं को भी अधिकार है और हिंदू महिलाओं को भी बराबरी से रहने का अधिकार है। अगर सती प्रथा गलत है, मैं भी उसको गलत मानता हूं, चाहे वह हिंदुओं में हो या कहीं भी हो, उसे समाप्त होना चाहिए। लेकिन एक कोशिश हुई थी, सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आया था। धारा १२५ सी.आर.पी.सी. की बहुत छोटी सी धारा है। आपको कोई केस डालना हो तो उसके लिए बहुत बड़ा वकील करने की जरूरत नहीं होती। कोई भी मेरे जैसा छोटा-मोटा वकील पकड़ लें, वह आपका केस डाल देता है। धारा १२५ में कहा गया कि अगर किसी महिला को उसका पति छोड़ दे या किसी बच्चे के पिता उसको न पालें तो वह कचहरी में जाकर दावा डाल सकता है कि हमें खर्चा दिया जाए और कोर्ट अधिक से अधिक पांच सौ रूपये महीना खर्चा दिला सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है यह अधिकार हमारी मुसलमान महिलाओं पर भी लागू होता है। सारी मुसलमान महिलाओं ने उसको लागू किया। मैं पूछना चाहता हूं कि उन महिलाओं को उस अधिकार से वंचित करने का प्रयास किसने किया था और उन मुसलमान महिलाओं पर जो एट्रोसिटीज की गई, उसके लिए कौन जिम्मेदार था। क्या श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार जिम्मेदार थी या श्री नरसिंहराव की सरकार जिम्मेदार थी? मुझे मालूम है

... (व्यवधान)

आरिफ साहब मैं आपको एमबैरेस नहीं करना चाहता, मैं

आपकी स्पीच पढ़कर नहीं सुनाना चाहता

... (व्यवधान)

आप मेरे मित्र हैं लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि एट्रोसिटीज का जिक्र करते हुए

... (व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : मैं सहमत हूं, मुझे कहने दीजिए मैं बताता हूं कि वास्तविकता क्या है।

... (व्यवधान)

श्री सत्य पाल जैन : सभापति महोदय, आडवाणी जी ने ठीक कहा, मुझे यह डर हो गया था नये सेक्युलर फ्रैण्डस की कम्पनी में जाकर कही आरिफ साहब

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : जो जजमेंट हुआ था वह बिल्कुल सही हुआ था। वही मुस्लिम महिलाएं चाहती थीं, वही होना चाहिए था। यह आप गलत बोल रहे हैं। जो हुआ था वह ठीक हुआ था।

... (व्यवधान)

डा. शकील अहमद : जो संविधान का संशोधन हुआ था वह बिलकुल सही हुआ था। ... (व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया बैठिए।

श्री सत्य पाल जैन : अच्छा होता अगर आरिफ़ साहब उस बात का जिक्र करते। मैं सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि चार घटनाएं यहां से और चार घटनाएं वहां से लेकर आप अल्पसंख्यक वर्ग की बात का जिक्र नहीं कर सकते। जो बात उन्होंने अन्त में कही, मैं उस बात को उनसे शुरू में कहने की उम्मीद कर रहा था। मैं आपसे १०० प्रतिशत सहमत हूं कि मुसलमानों का जो विकास होना चाहिए, नौकरियों में जो हिस्सा मिलना चाहिए जितना उनको रोजगार मिलना चाहिए था वह नहीं

मिला। इस सिलसिले में हमारे चंडीगढ़ के एक संस्थान ने उत्तर प्रदेश सरकार के कहने पर अध्ययन किया। यह इंडियन इंस्टीटयूट फार डवलपमेंट एंड कम्युनिकेशन है। यह इंस्टीटयूट उन शक्तियों से जुड़ा हुआ नहीं है जिनका जिक्र आप कर रहे हैं। भारत सरकार १९७०-७१ से मुसलमानों के स्टेटस के बारे में अध्ययन कराती रही है। १९८०-८१ में अध्यायन किया गया है। उसके अनुसार १९८०-८१ में मुसलमानों की जनसंख्या १८.५६ प्रतिशत थी और स्कूल में जाने वाले बच्चों की संख्या केवल १०.६६ प्रतिशत थी। यह किस के राज्य में था? जो बच्चे एलीजीबल हैं, यानी १०० बच्चों में से केवल १० बच्चे ही स्कूल जा रहे थे। उस समय आपकी सरकार थी। इसलिए आपको हमारी सरकार के बारे में कहने की बजाय अगर उनके बच्चों को पढ़ने के लिए भेजने की व्यवस्था ज्यादा से ज्यादा करते तो शायद आप मुसलमान और क़श्चियंस की अधिक सेवा करते।

सभापति महोदय, माननीय आरिफ जी ने डाटा दिया कि डायरैक्टर इतने हैं, ऑफीसर्स इतने हैं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि आम मुसलमान आज रोजी-रोटी के लिए परेशान है, वंचित है। आज आम मुसलमान की जो इकनौमिक हालत है वह बहुत कमजोर है। आप उनकी ग्रोथ नहीं करना चाहते। मैं उस कंट्रोवर्सी में नहीं जाना चाहता हूं। धर्म के नाम पर आप उनको एक विवाह करने के सिद्धान्त को नही अपनाने देना चाहते क्योंकि इसमें आपका फायदा है। आपकी वोट की राजनीति है। यदि मुसलमान आज इस सिद्धान्त को मान लेते हैं, तो उनकी संख्या सीमित होगी, वे पढ़-लिख कर तरक्की करेंगे फिर आपको वोट नहीं देंगे। इसलिए आप अपने वोटों की खातिर उनकी ग्रोथ नहीं चाहते। मेरे पास सारे डाटा है कि कितनी-कितनी लिटरेसी कहां-कहां पर है, लेकिन चूंकि समय नहीं है इसलिए मैं उस विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं।

सभापति महोदय, मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है तब से एक भी साम्प्रदायिक दंगा पूरे भारत में कहीं नहीं हुआ। यह मिसाल आपके सामने है। दिवाली पर, होली पर और रमजान पर, चाहे किसी त्यौहार को देख लीजिए एक भी साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ। आप पिछले ५० साल के डाटा निकाल कर देख लीजिए कि आपके समय में क्या हालत होती थी। कभी मेरठ में, कभी अलीगढ़ में, कभी मुजफ्फरनगर में, कभी सदर बाजार में और कभी जामा मस्जिद एरिया में कर्फयू लगता था, लेकिन जब से अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार आई है, जब से भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है, तब से चाहे दिवाली हो, चाहे दशहरा हो और चाहे होली या रमजान अथवा ईद का त्यौहार हो, कोई साम्प्रदायिक दंगा पूरे देश में कहीं पर भी नहीं हुआ।

सभापति महोदय, हमने अपने देश में अल्पसंख्यकों को वे अधिकार भी दिए हैं जो शायद उनके देश ने भी उनको नहीं दिए। विमैन पार्टीसिपेशन इन पॉलिटिक्स के ऊपर एक गोष्ठी में शामिल होने के लिए सउदी अरेबिया से एक शिष्ट मंडल भारत आया था। उससे हमें जानकारी मिली कि उनके अपने देश में महिलाओं को वोट देने का अधिकार और चुनाव लड़ने का अधिकार नहीं है जबकि हमारे देश ने अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक महिला और पुरुषों में कोई भेदभाव नहीं किया है। कानून के अनुसार वे सब बराबर हैं। कुछ देश तो ऐसे हैं जहां रहने वाला यदि उनके धर्म के अलावा कोई दूसरा धर्म अपनाता है या उसके अनुसार कार्य करता है, तो उसे फांसी पर लटका दिया जाता है। जबकि हमारे देश में हर आदमी स्वतंत्र है। वह चाहे कोई धर्म, पूजा पद्धति अपना सकता है। आप कह रहे हैं कि वाजपेयी जी की सरकार जब से आई है तब से दंगे बढ़ गए हैं। यदि आप ईमानदारी से कहें, तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है, तब से देश में दंगे नहीं हुए हैं जैसे आपकी सरकार के समय में होते थे। मेरे पास सभी राज्यों के आंकड़े हैं कि किस-किस राज्य में किस-किस सन् में कितने-कितने दंगे हुए जिनमें मुसलमान भाइयों के साथ ज्यादतियां हुई हैं। मेरे पास १९९५, ९६, ९७ और १९९८ के आंकड़े हैं। मैं बिहार के बारे में भी बताता हूं। वैस्ट बंगाल के बारे में भी बताता हूं। मैं उन राज्यों के बारे में भी बताता हूं जहां भारतीय जनता पार्टी कभी सत्ता में नहीं आई।

सभापति जी, वैस्ट बंगाल में भाजपा कभी सत्ता में नहीं रही। वहां तो कभी कुमारी ममता बैनर्जी या तपन सिकदार की सरकार नहीं बनी। वहां पर १९९६ में ४२ और १९९७ में ४० दंगे हुए।

१९९८ में ३० दंगें हुए। मैं पूछना चाहता हूं कि वहां के दंगों के लिए किसको दोष देना चाहेंगे? क्या वहां के लिए भी भाजपा को दोष देंगे? जोगी जी, मैं मध्य प्रदेश में भी आ रहा हू। मध्य प्रदेश में १९९६ में ४३ दंगें, १९९७ में ४३ दंगे और १९९८ में ३३ दंगे हुए हैं। ये दंगे तब हुए जब आपकी वहां सरकार थी। बिहार में, रघु वंश प्रसाद जी हमारी सरकार कहीं नहीं आई। वहां १९९६ में १४६ दंगे, १९९७ में ११८ दंगे और जब से हमारी सरकार आई है, उसके बाद ८४ दंगे हुए हैं। यह हिन्दुस्तान की इन्फोर्मेशन है।

... (व्यवधान)

कर्नाटक में, देवेगौड़ा जी यहां पर नहीं हैं। कर्नाटक में उनकी पार्टी की सरकार है। वहां पर १९९६ में २२ दंगे, १९९७ में ३१ दंगे और १९९८ में ३३ दंगे हुए।

सभापति जी, तमिलनाडु, उड़ीसा आदि सभी स्टेटस के डाटा मेरे पास हैं। इसलिए मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि जहां-जहां भी ऐसी बात होती है तो एक बहाना ढूंढ लेते हैं और उस बहाने को ढूंढकर आप इसके अंदर करना चाहते हैं। मेरा इल्जाम है कि कुछ लोग जानबूझकर इस हिन्दुस्तान की छवि दुनिया में खराब करना चाहते हैं। हमारे यहां मैजोरिटी और माइनौरिटी का कोई डिस्टिंक्शन्स नहीं है। हमने सबको बराबर के अधिकार दिये हैं तब भी इस फोरम का दुरुपयोग आप दुनिया में भारत को बदनाम करने के लिए करना चाहते हैं।

सभापति जी, यह एक ऐसा देश है जहां के राष्ट्रपति सभी धर्मों के रहे हैं। चीफ जस्टिस सभी धर्मों के रहे हैं। धर्म के नाम पर किसी के साथ कोई ज्यादती नहीं हुई है। मैं पूरे दावे के साथ कह सकता हूं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार धर्म के नाम पर न तो किसी के साथ ज्यादती करेगी और न ही किसी के साथ विशेष रियायत करेगी। न किसी की एपीजमैंट होगी और न किसी के साथ इनजस्टिस होगा। इन दोनों लोगों को हमारी सरकार में निराशा होगी, यह बात मैं कहना चाहता हूं।

वंदे मातरम् का जिक्र आया और दिल्ली में नोटिस का भी जिक्र आया। इस मुल्क में १२ करोड़ या १८ करोड़ के करीब मुसलमान भाई हैं। उसमें से अगर दिल्ली के किसी अधिकारी ने २०-५० या १०० लोगों को नोटिस जारी कर दिया, तो क्या बाकी कम्युनिटी के लोगों को उस तरह के नोटिस नहीं जारी होते? क्या किसी बॉर्डर पर क्रास करने वाले चाहे वह हिन्दु हो, सिक्ख हो, मुसलमान हो या ईसाई हो, उसको रोककर नहीं पूछा कि आप कौन हैं और क्या आपने अपनी नागरिकता

दिखाई है? क्या नार्थ ईस्ट के अंदर जाने वाले लोग चाहे वह किसी भी धर्म के हो, उनको हम चैक नहीं करते हैं? आप उनको माइनौरिटीज के साथ, जाति की बात कैसे ले जाते हैं।

वंदे मातरम् का बहुत जिक्र हुआ है। वंदे मातरम् और राष्ट्रीय गान का एक साथ सम्मान है। भारतीय जनता पार्टी किसी को मजबूर नहीं करना चाहती लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि वंदे मातरम् का विरोध हिन्दुस्तान के आम मुसलमानों ने नहीं किया है। कुछ लोगों ने फतवे जारी करके उन लोगों को विरोध करने के लिए उकसाया था। आम मुसलमान वंदे मातरम् गाता है और गायेगा। इस सदन के अंदर हमारे सारे मुसलमान भाई जब हम सैशन एडजर्न करते हैं तब वंदे मातरम् गाते हैं। जब सैशन शुरू होता है तो राष्ट्रीय गान, जन-गण मन से होता है और जब सदन का विसर्जन होता है तो वंदे मातरम् से होता है। राष्ट्रीय गान का जो सम्मान है वही वंदे मातरम् का सम्मान होना चाहिए। मैं धर्म का सम्मान करता हूं और किसी धर्म में नहीं लिखा कि अपने राष्ट्रीय गान का सम्मान मत करिये। किसी धर्म ने नहीं कहा कि राष्ट्रीय झंडे का सम्मान मत करिये। किसी ने नहीं कहा कि हमारा जो राष्ट्रीय चिन्ह है, उनका अपमान करिये। हम मजबूर नहीं करना चाहते हैं लेकिन यदि उसका कोई विरोध करता है और इस सीमा तक विरोध करता है कि हम फतवे इश्यू कर रहे हैं, तो इस देश का भला होने वाला नहीं है। आज फतवे आपके हक में इश्यू होंगे। आज फतवे कांग्रेस के पक्ष में, दिल्ली के चुनाव में इश्यू हो जायेंगे। आपको अच्छा लगता है तो मैं पूछना चाहता हूं कि जो पार्टी धर्मनिरपेक्षता होने का वादा करती है, वह राष्ट्रीय गान का विरोध कैसे कर सकती है। वह कैसे धार्मिक नेता से अपने-अपने फतवे इश्यू कर सकता है

मैं मुसलमानों से कहना चाहता हूं कि कांग्रेस को वोट दो। हिन्दुस्तान का मुसलमान पहले भी अपनी मर्जी से वोट डालता रहा है और आज भी अपनी मर्जी से वोट डालेगा। मैं इस मंच से उनसे अपील करना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में आपके भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी, हिन्दुस्तान में सिक्योरिटी की सबसे बड़ी गारंटी भारतीय जनता पार्टी और बी.जे.पी. की सरकार में है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में है। जिसके राज में आपको किसी किस्म का कोई खतरा नहीं है।

अंत में मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। श्री आरिफ खां ने एक शेर सुनाकर अपनी बात कही थी। श्री आरिफ खां ने हमको कटघरे में खड़ा किया था। बहुत सारे आरोप लगाये थे और छोटी-छोटी बातों पर हमारे मित्र आपत्ति करते रहे। मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी सही, रियल सैक्युलरिज्म में विश्वास करती है, सूडो सैक्युलरिज्म में विश्वास नहीं करती है। एपीजमैंट ऑफ नन जस्टिस टू आल, यह हमारी नीति रहेगी फिर भी आप हम पर हमेशा आरोप लगाते रहेंगे। यह आपको खुली आजादी है। इस बात की भी आजादी आपको संविधान देता है। हम भी आपकी वह आजादी तोड़ने वाले नहीं हैं। एक शेर कहकर मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं।

हमारी हालत यह है कि:

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम,

आप कत्ल भी करते हैं, तो चर्चा नहीं होता।

>SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): Mr. Chairman, Sir, I am happy that my distinguished predecessor-in-office is present in the House because this discussion relates to matters which are of direct concern, above all, to the Ministry of Home Affairs. The hon. Minister, I hope, will not take it amiss but I feel that probably he is the real ruler of this country. He has got a justified reputation as being a strong man, not like the previous Home Minister. And a strong man is expected to act strongly whenever necessary. But you will notice that the main burden of the criticism which has been levelled during this debate from the Opposition against the present Government is that when it is required to be strong, it is showing a singular lack of strength.

1821 hours (Mr. Speaker in the Chair)

I am grateful to Shri P. Shiv Shanker who has covered a lot of grounds, and, therefore, saved much of my time because I was going to say many of those things which he already referred to. The total number of Christians in the total population of India is 2.6 per cent and 12 per cent to 14 or 15 per cent are Muslims. The rest are obviously neither Christians nor Muslims.

Just now my friend here was saying that they are representing 85 per cent of the Hindus. I do not know how many they represent. It is not for me to calculate. The voting figures certainly do not corroborate what they are saying. I share your belief that 85 per cent, maybe 80 per cent or maybe, 90 per cent of the ordinary Hindus in this country are not communal.... (Interruptions) I do not know why you get so irritated when somebody speaks from here. I have been listening to you for the last two days without uttering a sound, to all the things which have been talked here. I am not trying to interrupt anybody.

श्री शंकर प्रसाद जायसवाल (वाराणसी): आप उत्तेजित न हों, शांत होकर बोलें। ... (व्यवधान)

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर): मैं उत्तेजित नहीं होता।

श्री शंकर प्रसाद जायसवाल : ठीक है।

श्री इन्द्रजीत गुप्त : आप और मैं एक साथ चलेंगे।

If it is true that 80 per cent, 85 per cent or 90 per cent of the ordinary Hindus in this country were really communal, I think this country's unity and integrity would not have lasted so long. They are deeply religious-minded people. There is no doubt about that. But being religious does not necessarily mean that you are communal in an aggressive sense, aggressively communal against other communities. That does not follow. I say this because sometimes, some people make a mistake by saying that because people are deeply religious-minded and observe religious practices and regularly go to temples or Gurudwaras or Masjids, therefore, they must be necessarily communal-minded also. But I do not agree with this point of view at all. This has been proved over and over again in the recent history of our country.

The majority of people in this country are certainly secular minded. They are anti-communal. We are living in a composite society with a composite culture. We are proud of the fact that people belonging to so many different communities practising different religions, having different cultures, speaking different languages and having different customs are living here together as part of one nation. This was not created in a single day. It could not be. It took hundreds of years for such a culture and such a national identity to be established in this country. I also wish to say that if this composite character, composite nature of our culture and our community life is not respected, if it is not honoured, if it is not upheld by everybody, if some people want to attack it, if some people want to weaken it and if some people want to create divisions among people, then this is not merely a question of creating communal disharmony, but it is something much more serious than that. This is where I differ slightly from Shri Shiv Shanker. He is right, of course, when he says that the kind of things which have been going on, specially recently, in this country are a danger to communal harmony. There is no doubt about it. But I say that there is a danger to something much more basic and fundamental and that is the essential unity of the nation, the unity of this country. The unity of this country cannot exist, the unity of this country cannot survive if this special brand of secularism, which we have established over the years and in which all these communities, religions and cultures co-exist and live together, is not allowed or if that is broken, if that is threatened, if anybody tries to impose by force one language, one culture and one religion on everybody. That will be the end of this country, as a united nation. It will be the end of India. That is why, we are very worried and troubled by what is happening.

Of course, there are many players who are playing this game. The BJP is the major party heading this coalition which is running the Government. There are also other people of Sangh Parivar under different names--who, strictly speaking, are not BJP people and the BJP does not claim them as its own people--Vishwa Hindu Parishad, Bajrang Dal. I am afraid to mention RSS because RSS is different kettle of fish. I think, Shiv Sena is a part of Sangh Parivar.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : No.

SHRI INDRAJIT GUPTA : I am glad to hear that.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : When have you got this idea?

SHRI INDRAJIT GUPTA : I met your leader in Mumbai when I was the Home Minister and I had a long talk with him. Since then, I had this idea. If I am wrong, I am wrong. People make mistakes. Some people think that they are infallible, they can never make any mistake in their lives. They never admit anything. I am not like them.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR :CPI has also committed a number of mistakes.

SHRI INDRAJIT GUPTA :Yes. What I am saying is that nobody can deny that in the recent months, some very unfortunate and tragic things have been happening in different parts of the country. Nobody can deny that. You may question as to who is responsible.

Somebody may question, "Who is doing all these things?" The B.J.P. will certainly say or the B.J.P. leadership will certainly say that they are not responsible at all, and some of these other members of the Sangh Parivar, who are not B.J.P. people, may be misbehaving here and there. Well, I think, this is all quibbling over words. Whether we like it or not, these members of the Sangh Parivar are part and parcel of this B.J.P. outfit. They may call themselves by other names, they may try to give themselves different identities, but surely they are very much the allies and supporters of the B.J.P. It is to their credit, no doubt, that they have helped the B.J.P. to come to power.

Sir, a number of Christians, for example, are there in Kerala, but no incident of this type has ever been reported from Kerala. I do not know if something has happened and there is no publicity. At least, there is no agitation about it. There are a number of Christians living in Kerala, Meghalaya, Nagaland and in other North-Eastern States, which are Christian-majority States. Since the Christians are in a majority, probably, they are better organised, better united among themselves, and they have been able to prevent this kind of a thing happening to them, which is being reported all the time from some other States. But they live in fear, I am sure. The Christian communities in the North-East certainly do not feel very confident of what their future may be.

Shri Shiv Shanker quoted about the frequent attacks. I was going to do the same, but it is not necessary now. The memorandum which has been submitted by the organisation known as the Catholic Union to the authorities including you, Sir, has shown that the frequency of attacks on Missionaries, on Churches, on Priests, on Nuns, on Church activists have been much more in 1998 than in the last 50 years or since Independence. There were six cases reported between 1978 and 1983, and 80 cases in the last two years. They were reported mainly in Gujarat, Maharashtra, Rajasthan and Uttar Pradesh.

Here, the propaganda which is being done to justify these attacks is, as has already been mentioned here, that they are a reaction to attempts at forcible conversions. I wish to state that this bogey of forcible conversion is a misconception. Article 25 of the Constitution, if we have bothered about the Constitution, gives every religious community the right to practise, to preach and to propagate -- these are the words of the Constitution, I have got it here with me and I can quote if you like -- one's own religion. This is the right which is enshrined in the Constitution of India and it does not apply to people who belong to one religion. It applies equally to all religions. So, if you practise, preach, profess and propagate your own religion as a right that you have got from the Constitution, it is not difficult, sometimes, for some people to accuse people of indulging in conversions. There are conversions which are not forcible also.

In our country there are some communities, oppressed communities, the communities which are deprived, who have been known to be going in for conversions on their own in order to escape from the social disabilities from which they are made to suffer. But of course, there could be forcible conversions also but that should not be.

Sir, tribal people, we know, have been forced in many cases to convert themselves to either Christianity or Hinduism in order to escape from the very terrible kind of economic conditions and social oppressions from which they were made to suffer. I think, the Viswa Hindu Parishad would like to have a monopoly over the religious conversion of all tribal groups. When you convert from one religion into Hinduism, the question arises to which branch or which kind of Hinduism are you going to convert them into. Hinduism is not a monolithic religion. It has so many sects and castes. So, when you convert to Hinduism in order to escape from some oppression, you have to decide as to what kind of a Hindu you want to be. Somebody has written `lower species of Hinduism, a polite way of putting it, is what some of these tribal groups have been more or less compelled or pressurised into trying to get converted to'.

Sir, Christianity like Islam is regarded by these Viswa Hindu Parishad people as a foreign religion, not a religion which is basically Indian. It is considered a foreign religion which has a mission, which has an evangelical mission, a mission to wear away Hindus from Hinduism and therefore, they should be regarded as enemies. So,

it is obvious that the concept of a composite India, a composite society with a composite culture is something which is not to the likings of the Viswa Hindu Parishad and it disturbs them very much.

Sir, I am asking one question, and that is all, which I would like Shri Advani to reply to: Whether any of these groups has got organic linkages, or not, with the Ruling Party of the coalition. That is one question. But the point is, if there is any religious group which does not recognise the right of other groups to be allowed to operate freely, then should such religious groups be given the freedom to do whatever they like in this country?

Sir, the BJP is the political wing of this whole combine. The integral parts of the Sangh Parivar are all supporters and ideologues of Hindutva. I think, the Home Minister should make his stand clear regarding the relationship between the BJP and these other groups. The BJP strenuously affirms that it has no hand at all in any anti-minority actions or persecutions and that it abides by what is stated in the Constitution. If that is so, then it is the duty of the Home Minister, in my humble opinion, to condemn and denounce these other groups which do not want to give this right to all others.

I should say that communalisation of even crimes is going on. The Srikrishna Commission in Mumbai has given a report after a long long inquiry which has been been rejected by the Maharashtra Government and by the Shiv Sena. It is all right, they can reject it if they want. But the ground on which they have rejected it mainly is - as far as I read from the Press, if it is wrong I may be corrected - that Srikrishna Commission's report is anti-Hindu and, therefore, it should be rejected. This is a curious wady of depicting crimes, crimes I should call them, where thousands of people have been killed, their houses have been burnt, their shops have been looted, they have been forced to leave their normal residences and take shelter somewhere where the police and the army had to be called out though belatedly. We know what went on there during those horrible days following the destruction of the Babri Masjid. All this is, to a great extent, depicted in Srikrishna Commission's report and it is dismissed on the ground of being anti-Hindu. What does that mean? If this type of crimes are committed, whoever may commit them, and they are depicted as being either anti-Muslim, or anti-Hindu, or anti-Christian, or anti some particular community or religion, it means that all crimes can be white-washed and can be painted if necessary depending on who is at the receiving end. So, I am not surprised that in Maharashtra, leading spokesmen - there also, not all of them perhaps, but some of them - are opposing the idea of the Pakistani cricket team coming to play in Mumbai. I found in the papers the other day my friend Shri Sirpotdar also leading a demonstration there on this point.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : Even today I say that and I will clarify my position.

SHRI INDRAJIT GUPTA : And some well-known Muslim singers who are very very popular and well-known to Mumbai people for their singing of Urdu Ghazals ...(Interruptions)

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : We are aware of a lot of Pakistani activities.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Yes, you are aware, I know. Your film industry is full of Muslims actors.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : They are enjoying and prospering also.

SHRI INDRAJIT GUPTA : Why should they not prosper? Is it just because they are Muslims?

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : Nobody has obstructed them and that is why they are prospering.

SHRI INDRAJIT GUPTA : If they can act freely in your films, why should they not be allowed to sing Ghazals? Why should they not be allowed to play cricket?

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : It is because they are Pakistanis. We are allowing all Muslim singers, actors, players and everybody to live freely in this country. We are opposing those who are Pakistanis.

SHRI INDRAJIT GUPTA : So, you do not want Pakistanis to sing Ghazals if they are well-known singers. You do not want their players to come and play cricket here.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR :Let them stop their activities in Jammu and Kashmir, we will welcome them.

SHRI INDRAJIT GUPTA : This is the trouble, Sir. This is how politics is sought to be injected even into culture and sports.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR Is killing people called culture? Hundreds of people are killed in Jammu and Kashmir everyday, and you want to play with them and exchange views with them!

SHRI INDRAJIT GUPTA : Shri Sirpotdar, why are you getting so worked up?

SHRI PRAMOTHES MUKHERJEE : Are the Pakistani players responsible for all this?

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : The Pakistani Government is responsible for this.

SHRI PRAMOTHES MUKHERJEE : Then what harm have the Pakistani players done?

MR. SPEAKER: Shri Sirpotdar, please do not interrupt.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : Sir, he was referring to it and I was replying on what basis we said that.

SHRI INDRAJIT GUPTA : There was a Minister of State at one time attached to the PMO. He is the member of the minority community. His name is Shri Aslam Sheh Khan. He is known to everybody, I think. He used to be a Union Minister. He used to be a very famous hockey player. I do not know, in which party, he is now.

SOME HON. MEMBERS: He is in BJP now... (Interruptions)

SHRI INDRAJIT GUPTA : Very good.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR (MUMBAI NORTH-WEST): He is not, at least, in the CPI... (Interruptions)

SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): He was not like CPI. There is no question of his being in CPI.

I found a long statement by him when he was a Minister of State. He said that `the 15-Point Programme for the welfare of minorities is not being implemented at all in Maharashtra.' He also said that `in Uttar Pradesh, several victims of the 1984 anti-Sikh riots had not been given the financial assistance which they had been promised.' He also said in that statement that `1,104 selected Muslims boys were called to appear for selection as constables in Uttar Pradesh Police department. But out of them ultimately only 100 were recruited.' He also said that `there are some Muslim young men, who were involved in the Police killings.' You will remember that in 1986 police killings took place in Hashimpura and Malyana. `Those people are still not traceable.' This is as per the statement made by Shri Aslam Sher Khan and not by me.

So, what I am saying is that the communalism of crime which is taking place in the form of anti-minority wave of violence is something which we should be very much concerned about.

Sir, on the 18th December, 1992, the United Nations had made a declaration. The Government of India is also a party to that. The United Nations had proclaimed a declaration of Minority Rights Day and had observed that `it should be observed every year on the 18th December in all countries which are Members of the United Nations' because the violation of Minority Rights is widespread. It is taking place in so many countries.

We are practically at the threshold of the 18th December. So, we should consider, the Government should consider and you, Sir, as the hon. Speaker of the House may also consider whether on the 18th of December, it would not be a fitting posture on our part, in some suitable form or the other, to observe this United Nations Declaration of Minority Rights. Otherwise, it remains on paper and as just a mockery.

Sir, the other minorities in this country have also been persecuted from time to time. In this House, cases are reported from time to time, by Members whether it involves Dalits, harijans or tibals apart from Muslims and Christians. These are also sections of our society who are frequently victims of atrocities and oppression. These cases are raised in this House and the Home Ministry is supposed to make inquiries into all of them, and to take necessary action.

We had a case, sometime ago. I do not know, what is the latest position about forcible deportation of Muslims from Bombay, Maharashtra on the allegation made that they were not Indians but Bangladeshis, speaking Bengalis just like I can speak. It is my language. I hope, when I speak in my mother tongue to somebody, that is not enough proof that I am a Bangladeshi. But on this pretext, that has been going on. There was a big commotion in this House which went on for some two or three days.

I do not know the exact details but I believe, ultimately, some settlement or agreement was reached in the course of which the two Governments, that is, the Government of Maharashtra and the Government of West Bengal were supposed to sit together and go through these lists of names and verify who was what and action was to be taken only on that basis. In the meanwhile, these unfortunate poor people who were looking for jobs and employment - they are not only in Mumbai but they are in Delhi and various other places also - have been subjected to all kinds of police harassment and police brutalities.

People are talking about Jammu and Kashmir. I would like to remind them of the Kashmiri Pandits also. About three lakh minority Kashmiri Pandits were forced to leave their ancestral homes and properties and only two thousand remain in the Valley. They are now refugees within their own country. They are in camps in various places. I believe, hon. Members have sometimes taken time to go and visit them and see the conditions in which they are living. Conditions are not yet being created for their safe return to the Kashmir Valley. Although the situation has improved considerably, they do not feel confident enough to go back. Their demand is that such a condition should be created which will enable them and their families to return there.

The Pakistan trained armed militants from across the border are selectively targeting the Kashmiri Pandit families, wherever they live, even in small villages and hamlets. They are trying to terrorise them, attack them and force them - those who are still there - to leave Kashmir and go away. They have submitted a memorandum to the Ministry of Home Affairs demanding a minority status and the setting up of a statutory State Minorities Commission for Jammu and Kashmir but I believe that the Government of India has not responded to this demand so far.

Attacks on Sikhs have been mentioned. Of course, it is for the Sikhs to decide what to do what not to do. All of us know which party was in power when they were subjected to massacres and worse things in 1984. We also know that in the elections to the State Assembly in Delhi almost every constituency in which the Sikhs are either in a majority or in a very big number, they have voted against the BJP and for the Congress. Why has this change come about? I do not know. Our Sikh friends can explain it to us. It is their right to vote anybody they like but it is a fact. We have to take note of this fact because they were tortured, killed and so on during the Congress regime in 1984 but it did not prevent them from overwhelmingly voting for the Congress and against the BJP in these Assembly elections.

PROF. PREM SINGH CHANDUMAJRA (PATIALA): I want to say that the Sikhs can never forget their feelings against the Congress. They can never forgive the Congress.

श्री इन्द्रजीत गुप्त : माफ क्यों करेंगे? माफ किसी को नहीं करना चाहिए। यह वोट की बात है।

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : वोट की बात उस समय बताऊंगा जब मेरी बोलने की बारी आएगी।

SHRI INDRAJIT GUPTA : The Sufi shrine in Chikmagalur in Karnataka which has been referred to at length by Shri P. Shiv Shanker has been there for years on top of a hill where Hindus and Muslims used to go together. It was founded by the Sufis. Why was there this sudden demand and movement to liberate that shrine? We do not know this till today. The Ministry of Home Affairs should have made some inquiries into this and found out who

was behind this, who worked up this tension, who agitated the people to say that they were going there- I am told, several thousand people went there - with the so-called object of `liberating' the shrine.

It was neither a Hindu shrine nor a Muslim shrine. But they wanted to liberate it. This is the kind of attitude and behaviour which is causing us great concern because it is something which, if goes on like this, will ultimately cause serious harm to the unity and integrity of this country, as a nation. There are some people who are votaries of, let us say, the slogan of Hindu rashtra. There are some people - I do not know who they are, if it is BJP, then, they should tell us - who say that if Pakistan can be declared as Islamic rashtra, based on their Shariat and all that, why should we not have a Hindu rashtra here?

In-between, there was a period when there was a lot of talk about Hindu rashtra. My knowledge of the things is that one of the reasons or one of the factors - not the only one - which incited some of our Sikh brothers in Punjab to start an agitation for a separate Khalistan State was precisely this fact that you in India are allowing people to go about propagating the need for a Hindu rashtra, they felt it will not be possible for us to continue to live there; we are not Hindus, we are Sikhs; we have different religion, different faith and everything. In that case, they were able to stir up an agitation for a separate Sikh State called the Khalistan State, based on the teachings of the Sikh Gurus and the Sikh scriptures. That has now died down; it is well and good.

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा : आप आनरेबल मैम्बर हैं, मैं आपकी बहुत रैस्पैक्ट करता हूं लेकिन फैक्टस को डिसटार्ट कर रहे हैं। पहली बात तो यह है कि आपने बोला कि सिक्ख गुरु सेपरेट स्टेट के लिये ऐजीटेशन करते रहे। यह कभी नहीं हो सकता। सिक्ख गुरुओं ने तो इस देश की संस्कृति की रक्षा के लिये अपनी गर्दने कटवा दी और अपने बच्चों को जिन्दा मरवा दिया। सिक्ख गुरुओं की टिचिंग तो यह है कि मानव की जाति सबें एक ही पहचान। उन्होंने देश के लिये रिश्ता जोड़ा है। पंजाब में तो मोर पावर्स टू स्टेट के लिये लड़ाई की जिसे सारे हिन्दुस्तान के स्टेटस मांग रहे हैं। कुछ लोगों द्वारा उसको सैस्निस्ट बनाया गया है। जो लोग उस समय पावर में थे, उन्होंने सेस्निस्ट बना दिया। सिक्ख देश से अलग नहीं होना चाहते वे तो सारे देश को आगे ले जाना चाहते हैं। इसलिये कहना चाहता हूं कि सारे फैक्टस को डिस्टार्ट किया गया है।

श्री इन्द्रजीत गुप्तः आप जो बोल रहे हैं, मैं उसका स्वागत करता हूं। उन दिनों में कुछ और बोला जा रहा था।

Then, I would just like to mention this also. I am afraid, this is rather a sensitive thing, but what is to be done? There is an order of the 9th of September 1997, an order by the Additional Sessions Judge, Lucknow, Shri Jagdish Prasad Srivastava. A copy of that order is here and I can produce it, if you like.

Para 59 of that order reads as follows and I quote:

"It is concluded that in the present case, a criminal conspiracy to demolish the disputed structure of the Ram Janam Bhoomi or Babri Masjid was hatched by the accused persons in the beginning of 1990 and was completed on 6th December 1992. Shri Lal Krishna Advani and others hatched criminal conspiracy to demolish the disputed premises at different times in different places. Therefore, I find prima facie case to charge Shri Lal Krishna Advani, Shri Murli Manohar Joshi and Shri Bala Sahib Thakeray on this ground."

Now, Sir, this was the observation of the order of the Additional Sessions Judge. What happened subsequent to this prima facie case established by the Judge, we do not know. Nothing has happened, as far as we know. We will hear from the hon. Home Minister, what is the latest position of that. Such things happen in this country.

19.00 hrs.

SHRI SATYA PAL JAIN : The framing of the charge has already been challenged in the court. The matter is still sub judice. I wanted to bring it to your notice. A revision petition has been filed against it.

SHRI MADHUKAR SIRPOTDAR : A number of observations like that have been made and for that purpose, the High Court is always there.

SHRI INDRAJIT GUPTA :Sir, I do not wish to take more time. I have taken much less time than some of my colleagues.

The issue is quite clear. Pre-meditated attacks aimed not only at the rights of the minorities but are aimed also at the entire pluralistic fabric of the Indian society, multi-religious multi-cultural and multi-lingual, on which the unity of India's nationhood depends. This is my charge. Therefore, I think the Home Ministry should be more alert, more vigilant and more active, not just technically looking at things as to who is responsible or who is not responsible.

There is a wave rising in the country. Some people are trying to raise a wave throughout the country which in my opinion is a wave of fascist ideology, as depicted by different activities which are going on. This wave is being instigated and aroused in the country but we do not know what the Government of India or the Home Ministry has to say about it. The least they can do in my opinion is, they can condemn and denounce these steps. They need not take action if they do not want to or do not feel like it. But these things which have been brought to the public notice every single day cannot just be allowed to go like that. They should be denounced, condemned and repudiated by the Government of India. In that respect, the Ministry of Home Affairs is the main instrument which should act but unfortunately up to now, it has not acted.

Therefore, Sir, I hope that at the end of this debate, on behalf of the Government, the hon. Home Minister will be much more categorical, much more positive and much more clear as to how he wants the common people in this country to regard these people and their activities, which are going on. If the Government keep quiet, the ordinary people and public are not in a position to know what to say and what to do. This is a weakness in the whole situation, the weakness which will lead to these people getting the upper hand ultimately. And, if that is done it will be a sad day for our country. Therefore, you, we and everybody concerned, who have all these years protected secularism and unity of the nation, will be held responsible if we do not speak up, do not mobilise public opinion and do not take a forthright stand against this danger which is coming.

19.04 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on

Thursday, December 10, 1998/Agrahayana 19, 1920 (Saka)